महर्षि दयानन्द सरस्वती की
उत्तराधिकारिणी परोपकारिणी सभा
का मुख पत्र

ओ३म्

विद्याविलासमनसो धृतशीलशिक्षाः,
सत्यव्रता रहितमानमलापहाराः।
संसारदुःखदलनेन सुभूषिता ये,
धन्या नरा विहितकर्म परोपकाराः।।

वर्ष : ६१ अंक : १५

दयानन्दाब्द: १९५

विक्रम संवत्: श्रावण कृष्ण २०७६

कलि संवत्: ५१२०

सृष्टि संवत्: १,९६,०८,५३,१२०

सम्पादक

डॉ. सुरेन्द्र कुमार

प्रकाशक- परोपकारिणी सभा,

केसरगंज, अजमेर- ३०५००१

दूरभाष: ०१४५-२४६०१६४

मुद्रक-मन्त्री, परोपकारिणी सभा

वैदिक यन्त्रालय, अजमेर।

दूरभाष : ०१४५-२४६०८३१

परोपकारी का शुल्क

भारत में

एक वर्ष-३०० रु.

पाँच वर्ष-१२०० रु.

आजीवन -३००० रु.

एक प्रति - १५/- रु.

विदेश में

वार्षिक-५० यू.के. पाउण्ड/८० यू.एस.डॉलर

द्विवार्षिक-९५ पाउण्ड/१५२ डॉलर

त्रिवार्षिक-१४० पाउण्ड/२२५ डॉलर

आजीवन (१५वर्ष)-५००पा./८०० डॉ.

एक प्रति - ३ पाउण्ड

एक प्रति - ४ डॉलर

वैदिक पुस्तकालय : ०१४५-२४६०१२०

ऋषि उद्यान : ०१४५-२६२११७०

RNI. No. ३९५९ / ५९

i jki dkjh

अगस्त प्रथम २०१९

अनुक्रम

०१. योगदर्शन में भुवन-ज्ञान और...	सम्पादकीय	०४
०२. मृत्यु सूक्त-३४	डॉ. धर्मवीर	०८
०३. कुछ तड़प-कुछ झड़प	प्रा. राजेन्द्र 'जिज्ञासु'	११
०४. सुधासिन्धु आर्याभिविनय पर...	डॉ. सत्यपाल	१५
०५. महर्षि पतञ्जलि द्वारा निर्दिष्ट योग...	जगदेव विद्यालङ्कार	१८
०६. शङ्का समाधान- ५३	डॉ. वेदपाल	२२
०७. भारतीय परम्परा में राजा के गुण	रामनिवास गुणग्राहक	२३
०८. अविनाशी स्तुति का स्वरूप	प्रो. ज्ञानप्रकाश शास्त्री	२५
०९. पाठकों की प्रतिक्रिया		२७
१०. योग-साधना एवं स्वाध्याय शिविर		२८
११. संस्था की ओर से...		३०
१२. १३६ वाँ ऋषि बलिदान समारोह		३३
१३. वेदगोष्ठी-२०१९		३४

www.paropkarinisabha.com
email : psabhaa@gmail.com

उपनिषद्, दर्शन, प्रवचन आदि सुनने हेतु बटन दबाएँ
www.paropkarinisabha.com→gallery→videos

'परोपकारी' पत्रिका में प्रकाशित सभी आलेखों में व्यक्त विचार लेखकों के निजी हैं। इन्हें सम्पादकीय नीति नहीं समझा जाये।
किसी भी विवाद की परिस्थिति में न्यायक्षेत्र अजमेर ही होगा।

सम्पादकीय

योगदर्शन में भुवन-ज्ञान और उसकी पहचान-२

जिस प्रकार किसी देश के कई नाम प्रचलित होते हैं उसी प्रकार '**पाताल**' नामक भू-भाग के भी अनेक पर्यायवाची नाम प्रचलित थे जो उसकी सामाजिक और भौगोलिक स्थिति पर प्रकाश डालते हैं। पृथिवी के निम्न भू-भागों में अवस्थित होने के कारण पाताल का एक नाम '**अधोभुवन**' था। '**रसा**' अर्थात् भूमि के निम्नतर क्षेत्र में अवस्थित होने के कारण अन्य नाम '**रसातल**' था। देवों के भाइयों नाग-जनों या उरग-जनों का अधिसंख्य आवास होने के कारण पाताल के '**नागलोक**' '**उरगलोक**' नाम प्रचलित थे। देवों के अन्य भाई **दिति** के वंशज **बलि** राजा का पाताल के एक प्रदेश में निवास होने के कारण उसका '**बलिसद्म**' या '**बलि-आलय**' नाम प्रसिद्ध हो गया था। जैसे 'दिल्ली' नगर और प्रदेश दोनों का एक ही नाम है, उसी प्रकार उक्त नाम सम्पूर्ण पाताल क्षेत्र के भी थे और अपने-अपने प्रदेश-विशेष या नगर के बोधक भी थे।

पाताल लोक के साथ बलि राजा का घनिष्ठ सम्बन्ध है। उसकी प्रसिद्ध ऐतिहासिक घटना की चर्चा किये बिना पाताल लोक का परिचय अपूर्ण रह जाता है। जैसा कि ऊपर बताया जा चुका है, 'देवलोक' (स्वर्गलोक) के सिंहासन पर सर्वप्रथम आधिपत्य देवों के बड़े भाई दैत्यों या असुरों का था। देवलोक के पहले 'इन्द्र' पदवीधारी तीन सम्राट् दैत्य वंश के थे। वे थे- हिरण्यकशिपु, उसका पुत्र प्रहलाद, उसका पौत्र बलि। इनके साथ समय-समय पर राज्यसत्ता पाने के लिए छोटे भाई देवों अर्थात् अदिति के पुत्रों इन्द्र, विष्णु आदि के युद्ध हुए किन्तु दैत्यों को पराजित नहीं कर सके। अन्ततः बलि द्वारा आयोजित एक बृहद् यज्ञ में विष्णु ने ब्राह्मण ब्रह्मचारी का छद्म वेश धारण करके बलि से भूमिदान माँग लिया और बलि ने दान का वचन दे दिया। उस वचनबद्धता की आड़ में विष्णु ने बलि को देवलोक के सिंहासन से पदच्युत कर दिया और अपने भाई इन्द्र को सम्राट् बना दिया। ये बलि को बाँधकर देवलोक से ले गये और उसका वध न करके पाताल क्षेत्र के एक लोक (प्रदेश) में विस्थापित कर दिया। बलि-बन्धन की इस घटना का उल्लेख रामायण, महाभारत, महाभाष्य, पुराण, काव्य आदि प्रायः सभी संस्कृत-ग्रन्थों में मिलता है (वाल्मीकि-रामायण, बालकाण्ड अध्याय २९, अरण्यकाण्ड ६१, महाभारत, अनुशासन पर्व ६.३५, वन पर्व २७२.६३-६९, महाभाष्य ३.१.२६ आदि)।

बलि के पराजय के बाद दैत्यवंश के असुर-देवों के पास देवलोक की सत्ता कभी नहीं आई। असुर-देवों और अदिति वंश के देवों में शत्रुता बढ़ती गई। परिणामस्वरूप समय-समय पर बारह देव-असुर संग्राम हुए और असुरों एवं उनके समर्थकों को निम्न भू-भागों में विस्थापन करना पड़ा, उनमें देव-वंशी भी सम्मिलित थे। प्रारम्भिक पातल के भू-भागों की सीमा कैस्पियन सागर (क्षीर सागर या कश्यपाणां सागरः) और अराल सागर के मध्य क्षेत्रों से लेकर मध्य एशिया के दक्षिण-पश्चिम तराई के क्षेत्रों तक रही है। यह क्षेत्र अनेक नदियों द्वारा सिंचित, सागरों और झीलों से परिपूर्ण है। सात पाताल लोक ऊपर-नीचे नहीं थे अपितु इस निम्नतर भू-भाग में प्रदेशों के समान अवस्थित थे। योगदर्शन के व्यास-भाष्य में सात पातालों का क्रम और नाम भिन्न प्रकार से यह है- महातल, रसातल, अतल, सुतल, वितल, तलातल, पाताल। संस्कृत के अधिकांश ऐतिहासिक ग्रन्थों में अग्रिम क्रम स्वीकृत है- अतल, वितल, सुतल, तलातल, महातल, रसातल, पाताल। कुछ ग्रन्थों में महातल और रसातल का नामोल्लेख न होकर नितल और गभस्तिमत् तथा पाताल नाम न देकर नितल नाम दिया है। कुछ ग्रन्थों में पाताल और रसातल पर्यायवाची रूप में लिखे हुए मिलते हैं। देव-असुर संग्रामों से पूर्व इन भू-भागों में आर्य या देव जन-समुदायों की बस्तियाँ बस चुकी थीं। भौतिक सुख-सुविधा, समृद्धि और शिल्पकला की दृष्टि से पाताल लोक देवलोक की अपेक्षया अधिक विकसित थे। योगदर्शन में पातालों का विवरण नहीं दिया गया है किन्तु वैदिक ग्रन्थों, रामायण, महाभारत, पुराण आदि में प्राप्त है। पाठकों को यह स्मरण रखना चाहिए कि युगानुरूप विवरणों में यदि कहीं अन्तर है तो उसका कारण है कालान्तर में प्राकृतिक, देश, प्रदेश की स्थिति एवं सीमाओं में परिवर्तन-परिवर्धन होते रहना। उपलब्ध संस्कृत-साहित्य के अनुसार सात पाताल लोकों का प्राप्त विवरण इस प्रकार है-

१. महातल- इस पाताल लोक का शासक हिरण्यकशिपु का पौत्र और प्रह्लाद का पुत्र विरोचन था। यह इन्द्र का सहाध्यायी रहा है। छान्दोग्य उपनिषद् में वह कथा आती है (८.७.२)। 'तारकामय' नामक देव-असुर संग्राम में यह असुर देवों का सेनापति था और इन्द्र द्वारा मारा गया (तैत्तिरीय ब्राह्मण १.५९.१, १.५.१०.७, महाभारत, द्रोणपर्व ६९.२०, शान्ति. ९८.४९,५०)। पुराणों के अनुसार, यह पाँचवाँ पाताल है। इसका अन्य नाम 'अर्वाक्तल' भी था। इसमें दितिवंशीय, दानववंशीय, नागवंशीय देव जन-समुदाय भी रहते थे। इसकी राजधानी 'हिरण्यपुर' थी जिसके अवशेष आज 'हिरकेनिया' के नाम से ईरान के पूर्व एस्टराबाद के निकट विद्यमान हैं। यह 'क्षीर-सागर' के दक्षिण-पूर्व में है। यह नगर पहले भारत में था (हरिवंश पुराण अ. २६२)।

२. रसातल– यह उत्तर-पूर्वी क्षीर सागर (आधुनिक कैस्पियन सागर, संस्कृत नाम कश्यपाणां सागरः) के द्वीप या तट पर अवस्थित था। इसको कहीं छठा और कहीं सातवाँ पाताल लोक बताया है। इसीलिए संस्कृत-ग्रन्थों में 'रसातल' और 'पाताल' को एक प्रदेश वर्णित किया है। रामायण, महाभारत और पुराण आदि के भूगोल-विषयक विवरणों के अनुसार, रसातल का शासक नागराज वासुकि था। उसकी राजधानी का नाम 'भोगपुरी', अन्य नाम 'नागपुरी' था। इस लोक को रावण ने तथा इन्द्रजित् ने और दिग्विजय के समय अर्जुन ने भी जीता था (रामायण, उत्तरकाण्ड २३.४-२५, महाभारत, युद्ध. ७.८, सभापर्व अ. २०-२८, उद्योग. १०९.१८-२०)। आधुनिक भूगोल-अन्वेषक हिमालय के उत्तर में स्थित 'दक्षिणी उत्तर कुरु' को रसातल मानते हैं।

३. अतल– इसका शासक देव समुदाय के मय-असुर का पुत्र बल था। हिरण्यकशिपु के सेनापति नमुचि का भी निवास स्थान इसी प्रदेश में था। पुराणानुसार, यह प्रथम पाताल लोक है। यहाँ की भूमि कृष्णवर्णा थी। इसका अधिक विवरण उपलब्ध नहीं है। हिरण्यकशिपु के भाई हिरण्याक्ष के इन्द्र के साथ हुए युद्ध में यह इन्द्र द्वारा मारा गया। अनुमान है कि यह पश्चिम दिशा के समुद्र तटवर्ती क्षेत्र में रहा हो। यह मानने में भी आपत्ति नहीं होनी चाहिए कि वर्तमान 'अटलांटिक' सागर का 'अतलांतिक सागर' परिवर्तित उच्चारण हो। इसका अन्य नाम 'अन्ध महासागर' है। दोनों नामों का समानार्थ है- 'गहरा सागर'। आधुनिक अन्वेषक सागर के नाम को 'एटलस' के साथ गलत जोड़ते हैं। अब तो अमेरिका में भी आर्य-सभ्यता मिल गई है जिसको 'माया (मय) सभ्यता' नाम दिया है। अत: संस्कृत साहित्य में प्राप्त उल्लेखों पर विश्वास किया जा सकता है। यह अमेरिका का समीपवर्ती महासागर ही है।

४. सुतल– वैदिक एवं लौकिक संस्कृत साहित्य में बलि के कारण यह लोक सर्वाधिक चर्चित है। प्रह्लाद का पौत्र और विरोचन का पुत्र बलि एक धर्मनिष्ठ और शक्तिशाली राजा था। असुर समुदाय के दिति-वंशी दैत्यों में यह देवलोक का इन्द्र पदवीधारी सम्राट् था। जब अदिति-वंशी देवों से पराजित नहीं हुआ तो एक बृहद् यज्ञ में विष्णु ने छल से इससे राज्य छीन कर इन्द्र को दे दिया और इसको पाताल में जाना पड़ा। उसका नाम 'सुतल' था। उसका शासक बलि बना। पुराणानुसार, यह तीसरे क्रम पर परिगणित लोक है। बलि-बन्धन की यह घटना रामायण, महाभारत, महाभाष्य, पुराण आदि में बहु-चर्चित है (रामायण, उत्तर. अ. २३, दाक्षिणात्य, अर. ६१.२४, वन. २७.२ अ. महाभाष्य ३.१.२६)। आधुनिक भूगोलवेत्ता ईरान के बैक्ट्रिया (संस्कृत वाल्हीक) में इसकी स्थिति मानते हैं।

५. वितल– हिमालय के उत्तरवर्ती क्षेत्र में प्रवाहित 'हाटक' नदी का प्रदेश। यह कुबेर के अधीन रहा है। गुह्यक जन-समुदाय का इसमें निवास था। कालान्तर में यह शिव के अधिकार में भी आ गया था। दिग्विजय के समय अर्जुन ने यहाँ से कर-ग्रहण किया था (महाभारत, सभा. २८.३-४, ३२.१२)। आधुनिक विद्वान् हाटक नदी का समीकरण जरफ्शां आक्सस की सहायक नदी से करते हैं। पुराणानुसार, यह दूसरा पाताल है।

६. तलातल– इसका संक्षिप्त नाम 'तल' भी मिलता है। इस पर देव समुदाय के मय असुर का शासन था। मय नामक अनेक इतिहास-प्रसिद्ध व्यक्ति हुए हैं। इस कारण उनका इतिहास भी गड्ड-मड्ड हो गया है। संक्षेप में यह कहा जा सकता है कि मय वंशी जन परम्परागत रूप से शिल्पकला और वास्तुकला ज्ञाता रहे हैं। उन्हीं के द्वारा माया-विद्या या माया-सभ्यता का विकास हुआ है। महाभारत के अनुसार, तलातल का शासक मय देवों के विरुद्ध दैत्य पक्ष से लड़ा था। सम्भवत: इसका शासित प्रदेश पश्चिम दिशा में स्थित था (सभा. ५१.७)। मयवंशी सभी क्षेत्रों में आवासित रहे हैं। अधिकांश निर्माणों में उनका योगदान था। मैक्सिको (अमेरिका) में जो भूमिगत नगर मिला है, उसको मयों (माया सभ्यता) का नगर माना गया है। पुराणानुसार यह चौथा पाताल है।। प्रह्लाद का निवास भी इसी क्षेत्र में था (ब्रह्माण्ड पुराण २.२०,१२-१४)। ईरानी मान्यता के अनुसार प्रह्लाद का निवास आरम्भिक ईरान में था। यह लोक भी ईरान क्षेत्र में हो सकता है।

७. पाताल– सात पातालों के भू-भाग का सर्व सामान्य एक नाम पाताल है और उसमें एक प्रदेश 'पाताल' नामक भी है। यह सातवाँ लोक है। अनेक स्थानों पर पाताल, रसातल को एक ही प्रदेश मानकर वही विवरण दिये हैं, जैसे-वासुकि शासक है, भोगपुरी नगरी है, वहाँ शेषनाग है, क्षीर-सागर में है, आदि। कुछ विभेदक तथ्य यह संकेत देते हैं कि ये दोनों लोक क्षीर-समुद्र में निकटवर्ती रहे हैं। महाभारत में नारद मुनि इसकी स्थिति नागलोक के मध्य बताते हैं। नागलोक रसातल है (उद्योग. १०१.१-८)। पाताल में पौलोम, कालकंज या कालकेय निवातकवच नामक दैत्यों का निवास था। अर्जुन ने समुद्र पार जाकर उनका वध किया (वन १७३ अ.)। कार्तवीर्य ने भी समुद्र पार कर नागों को परास्त किया (वायु. ९४ अ.)। यह लोक 'हिरण्यपुर' (हिरकेनिया) के निकट था (उद्योग. १०१.१,६)।

आधुनिक भूगोलवेत्ताओं का मानना है कि यह पाताल सिन्धु-घाटी में हैदराबाद (पाकिस्तान) के निकट था। यूनानियों ने उसको 'पातालेने' लिखा है। उक्त दोनों मतों में सामंजस्य इस प्रकार बनता है कि आरम्भिक पाताल क्षीर-सागर के

निकट था। पुन: जब देवों का वहाँ आक्रमण हुआ तो वे लोग वहाँ से स्थानान्तरण करके सिन्धुघाटी में आ बसे और यहाँ अपना पुराना नाम रखकर रहने लगे। यह उनका दूसरा/तीसरा स्थानान्तरण था।

आगे लिखा योग-भाष्य का यह कथन विशेष ध्यातव्य और गम्भीरता से विचारणीय है कि उक्त पातालों, समुद्री द्वीपों, पर्वतीय क्षेत्रों में बसे देव, असुर, गन्धर्व, किन्नर, किंपुरुष, यक्ष, राक्षस, भूत, प्रेत, पिशाच, अपस्मारक, अप्सरा, ब्रह्मराक्षस, कूष्माड, विनायक, ये सब देववंशी समुदायान्तर्गत मानवप्रजातीय जन थे, क्योंकि ये सब मूल जनक प्रजापति कश्यप की सन्तानें या वंशज थे और इनकी माताएँ ऋषि दक्ष प्रजापति आदि की पुत्रियाँ थीं। प्रारम्भ में इनकी भाषा, धर्मविधि, विवाह-विधि, रहन-सहन एक थे, अर्थात् ये सब आर्य थे। इस इतिहास की पुष्टि वैदिक साहित्य, रामायण, महाभारत, पुराण आदि सभी प्राचीन ग्रन्थ करते हैं। आचरण और विचारधारा में भिन्नता आने से परवर्ती समय में इनके प्रतीकार्थ बदलते चले गये और फिर वे निम्न अर्थ में रूढ़ हो गये।

सात द्वीप

भारतवर्ष का प्राचीनतम इतिहास हमें जानकारी देता है कि आदिकाल में प्रजाएँ ब्रह्मा नामक प्रमुखों के निर्देशन-मार्गदर्शन में व्यवहार करती थीं। उस समय न राजा था, न दण्डविधि थी, न दण्डदाता अधिकारी थे, प्रजाएँ आत्मप्रेरणा से अपने कर्त्तव्यों का पालन करती थीं। जब प्रजाएँ बढ़ीं तो अपराध-विवाद होने लगे। प्रजाओं को राजा की आवश्यकता अनुभव हुई। उस समय आठवें पंकज नामक ब्रह्मा का कार्यकाल चल रहा था। प्रजाओं ने उनके सामने किसी को राजा बनाने का निवेदन किया। ब्राह्मण वर्णधारी ब्रह्मा ने अपने बड़े पुत्र मनु को राजा बनने का आदेश दिया (महाभारत, शान्ति. ६७.२०-३२)। क्षत्रिय वर्ण की दीक्षा लेकर मनु पृथिवी का प्रथम राजा बना। उसने विश्व की प्रथम राज्य-व्यवस्था और समाज-व्यवस्था का निर्माण किया। वह विश्व का प्रथम **'संविधान-निर्माता'** था। ब्रह्मा का एक विशेषण **'स्वयम्भू'** था। उसके अनुसार मनु का नाम **'मनु स्वायम्भुव'** प्रसिद्ध हुआ। संस्कृत में ब्रह्मा का एक नाम **'आदिम'** है, जो अपभ्रंश होकर अरबी में **'आदम'** हो गया। विश्व के सभी आर्य, सनातनी, जैन, बौद्ध, सिख, पारसी जन 'ब्रह्मा' को और यहूदी, ईसाई, मुसलमान 'आदम' को अपना आदि-पुरुष स्वीकार करते हैं। यह मूल पुरुष सभी समुदायों का एक ही व्यक्ति 'ब्रह्मा' है, जो वैदिक आर्य है, देव है।

उसके पुत्र मनु स्वायम्भुव ने सम्पूर्ण आवासित पृथिवी पर एकछत्र राज्य किया, उस समय पृथिवी का सात द्वीपों में विभाजन नहीं हुआ था (भागवत ३.२२.२५)। फिर मनु ने अपना राज्य मुख्यत: बड़े पुत्र प्रियव्रत को सौंप दिया। प्रियव्रत के राज्यकाल में पृथिवी के भूगोल पर अनुसन्धान हुआ और सात द्वीपों तथा सात सहवर्ती समुद्रों का अन्वेषण, निर्धारण एवं नामकरण हुआ (भागवत पुराण ५.१६.२, विष्णु २.२.४)। प्रियव्रत के दस पुत्र हुए। उनमें से तीन महावीर, कवि और सवन ब्राह्मण वर्ण धारण करके तपस्यार्थ वन में चले गये। शेष सात क्षत्रिय वर्णस्थ पुत्रों को प्रियव्रत ने सात द्वीपों के अनुसार राज्य आवंटित कर दिया। वे सात द्वीप और उनके शासक इस प्रकार कहे गये हैं-

१. जम्बूद्वीप- शासक प्रियव्रत का ज्येष्ठ पुत्र अग्नीध्र। जम्बू वन और जम्बू नदी के कारण द्वीप का नामकरण हुआ। मेरु पर्वत के चारों ओर का क्षेत्र जो लवण सागर से घिरा है, वह आधुनिक एशिया महाद्वीप जम्बू द्वीप था। इसी द्वीप में मनु की राजधानी 'बर्हिष्मती' थी (भागवत. ३.२२.२९)।

२. प्लक्ष द्वीप- योगदर्शन में इसका नाम नहीं है। शायद इसे 'गोमेध' कहा है, इसका शासक इध्मजिह्व था। प्लक्ष वन के कारण यह नामकरण हुआ। इसका समीकरण योरोप द्वीप से किया जाता है।

३. शाल्मल द्वीप- शासक यज्ञबाहु था। शाल्मल (सेंमर) वन के कारण यह नाम हुआ। यह दधिसमुद्र से घिरा है। इसकी पहचान अटलांटिक द्वीप से की है। जहाँ आजकल अटलांटिक (अतलान्तिक) सागर है, वहाँ कभी द्वीप थे और नगर थे।

४. कुशद्वीप- शासक हिरण्यरेता था। कुश नामक झाड़ों के वन के कारण यह नाम हुआ। यह सुरा नामक सागर से घिरा है। महाभारत के अनुसार इसमें छह कुल पर्वत हैं और सात प्रमुख नगर थे (भीष्म. १२.६.१२-१४)। यह अफ्रीका महाद्वीप है।

५. क्रौञ्च द्वीप- शासक घृतपृष्ठ था। वहाँ स्थित क्रौञ्च नामक पर्वत-विशेष के कारण इस द्वीप का नाम हुआ। यह घृत नामक समुद्र से घिरा है। इसमें अन्य पाँच पर्वत तथा आठ प्रमुख नगर थे। इसके निवासी जन गौरवर्ण के थे (भीष्म. १२.७, ८, १७-२०)। इसकी वर्तमान स्थिति उत्तर अमेरिका द्वीप है।

६. शाक द्वीप- शासक मेधातिथि था। शाक (सागौन) वन के कारण नाम हुआ। यह इक्षुरस समुद्र से घिरा है। इसमें चार जनपद थे (भीष्म. अ. ११)। इसका समीकरण दक्षिण अमेरिका से किया जाता है। यह शाकद्वीप देश से भिन्न है।

७. पुष्कर द्वीप- शासक वीतिहोत्र था। यह नाम पुष्कर पर्वत के कारण हुआ (भीष्म पर्व १२.२४)। मतान्तर से, जलीय प्रदेश होने के कारण यह नाम हुआ। यह स्वादूदक

समुद्र से घिरा था। पहले यहाँ इतनी बर्फ नहीं थी। इसका समीकरण अंटार्टिका ध्रुव-क्षेत्र से किया जाता है।

योगभाष्य और पुराणों में आवेष्टक समुद्रों के नामों में मतान्तर है।

जम्बू द्वीप के नौ वर्ष अर्थात् देश

स्वायम्भुव मनु के पौत्र और प्रियव्रत के ज्येष्ठ पुत्र अग्नीध्र (या आग्नीध्र) को राज्य के बँटवारे में जम्बू द्वीप (एशिया द्वीप) मिला था। अग्नीध्र के नौ पुत्र हुए। सभी ने राज्य भाग चाहा। उसने नौ पुत्रों में अपने राज्य का बँटवारा किया। भारत का निकटवर्ती भू-भाग होने के कारण जम्बूद्वीप का भूगोल अधिक स्पष्ट और व्यापक मिलता है। वैदिक-साहित्य, पुराणों एवं काव्यों में न्यूनाधिक रूप में उपलब्ध वह विवरण निम्न प्रकार है-

१. रमणक वर्ष- अन्य नाम रम्यक वर्ष। मेरु (सुमेरु) पर्वत के उत्तर में रमणक के बाद अन्तिम तीसरा देश। नीलगिरि को पार करके, श्वेत पर्वत के दक्षिण और निषध के उत्तर में स्थित था (महाभारत भीष्म. ८.२-४)। नव्य शोध के अनुसार, रमी या रमनी टापुओं का समूह। शासक रम्यक था।

२. हिरण्यवर्ष- अन्य नाम श्वेतद्वीप वर्ष। शासक हिरण्य था। मेरु पर्वत के उत्तर में उत्तर कुरु के बाद दूसरा देश है, जो नीलगिरि के दक्षिण में और निषध के उत्तर में स्थित था। श्वेतवर्ण वाले जन थे (महाभारत, भीष्म. ८.५-८, शान्ति. ३३६.२७-५९)। नव्य शोध के अनुसार, ईरान में आमू दरिया के दक्षिण का क्षेत्र।

३. उत्तर कुरु- अन्य नाम शृंगवद्वर्ष, कुरुवर्ष। शासक कुरु था। मेरु से उत्तर में प्रथम सहवर्ती प्रमुख आर्य देश था, जो नीलगिरि के दक्षिण में था। यहाँ दिग्विजय के समय अर्जुन गये थे (भीष्म. ७.२-१३, सभा. २८.७-१०, ब्रह्माण्ड. २.१४.४७,५२)। नव्य शोध-हिमालय से लेकर आर्कटिक क्षेत्र तक का भाग। इतिहासकार टाल्मी द्वारा अन्वेषित 'ओट्टोकोरई' क्षेत्र।

४. हरि वर्ष- अन्य नाम नैषधवर्ष। शासक हरिवर्ष था। मेरु पर्वत के दक्षिण में सहवर्ती प्रथम भू-भाग। हेमकूट पर्वत के उत्तर में यह देश स्थित है। निषध पर्वत हरिवर्ष और इलावृत वर्ष के मध्य में है। अर्जुन दिग्विजय के लिए दोनों पर्वत-क्षेत्रों में गये थे (वनपर्व १८८.११२, सभापर्व २८.६ के बाद दाक्षिणात्य पाठ में)। नव्य शोध-सम्भवत: अश्वों के लिए प्रसिद्ध सुग्ध (ईरान-अफगानिस्तान क्षेत्र में)। गन्धमादन के पश्चिम में और काबुल के उत्तर में स्थित 'हिन्दुकुश' पर्वत निषधपर्वत है।

५. किम्पुरुष वर्ष- अन्य नाम हेमकूट वर्ष। शासक किम्पुरुष था। मेरु से दक्षिण में हरिवर्ष के बाद दूसरा देश, जो हिमालय से उत्तर में था। अर्जुन ने इसको जीता था (भीष्म. ६.७, सभा २८.१-२, वन. ११०.१-२१)। नव्य शोध- हेमकूट पर्वत के चारों ओर अवस्थित हिमालयी क्षेत्र।

६. भारतवर्ष- अन्य नाम आर्यावर्त, अजनाभ वर्ष, हिमवर्ष। मेरु के दक्षिण में हिमालय से लेकर दक्षिण समुद्र तक विस्तृत किम्पुरुष के बाद तीसरा प्रख्यात देश।। पश्चिम में ईरान से लेकर पूर्व में बर्मा (ब्रह्मदेश, म्यान्मार) तक। शासक अग्नीध्र का ज्येष्ठ पुत्र नाभि था। यह मेरु से दक्षिण में तीसरा देश था।

७. भद्राश्व वर्ष- शासक भद्राश्व था। मेरु से पूर्व में माल्यवान् पर्वत तक का प्रदेश। यह युधिष्ठिर के शासन में था (भीष्म. ६.१३, ७.१३-१८, शान्ति. १४.२४)। नव्य शोध- मेरु के पूर्व में सीता (तारिम, जक्सरटीज, सी-तो) की घाटी। यह चीन में काशगर और यारकन्द आदि का क्षेत्र है।

८. केतुमाल वर्ष- अन्य नाम गन्धमादन वर्ष। शासक केतुमाल था। मेरु के पश्चिम में गन्धमादन पर्वत-क्षेत्र, बदरिकाश्रम से आगे। पाण्डव यहाँ कई बार गये (आदिपर्व ३०.१०, वन. ३७.४१, १४३, १६० अध्याय, भीष्म. ६.१३, ३१-३३)। नव्य शोध- वंक्षु (आमू, आक्सस) नदी की घाटी का प्रदेश, मध्य एवं पश्चिम एशिया क्षेत्र।

९. इलावृत वर्ष- इसका शासक इलावृत था। यह मेरु पर्वत पर स्थित जम्बू द्वीप का मध्य देश था (महाभारत, सभा. २८.६ के बाद)। नव्य शोध- चीन, कजाखस्तान में इली नदी-घाटी का क्षेत्र है।

युद्धों, प्राकृतिक आपदाओं और आजीविका-खोज के कारण असुर, सुर, दानव, नाग आदि देववंशी सभी वैदिक आर्य स्थानान्तरण करते हुए ईरान, इराक, मिश्र, असीरिया, सीरिया, सिन्धुघाटी, यूनान, रोम आदि पहुँचे। कालान्तर में अमेरिका भी गये। आज वहाँ मैक्सिको, हांडुरास, ग्वाटेमाला, यूकाटन प्राय:द्वीप में आर्य सभ्यता के चिह्न मिल चुके हैं। अमेरिका के मूल निवासी मय, इंका आर्य (हिन्दू) माने गये हैं। सूर्य सिद्धान्त आदि ज्योतिष ग्रन्थों में वहाँ के सूर्यास्त और सूर्योदय के समय का उल्लेख है। यह सब शोध-कार्य वहाँ बिना गये सम्भव नहीं था। अत: अब आर्यों के आदिम विश्व-प्रसार की धारणाएँ अविश्वसनीय नहीं रह गयी हैं। महत्त्वपूर्ण तथ्य यह है कि आधुनिक भूगोलविदों, पुरातत्त्ववेत्ताओं, इतिहासकारों ने इन धारणाओं की पुष्टि कर दी है। इस विषय पर विस्तार से कभी आगे लिखा जायेगा।

विश्व में सबसे पहले आर्यों ने उपर्युक्त भौगोलिक एवं ज्योतिषीय खोज की। यह आर्यों के लिए गर्व एवं गौरव का विषय है। इसकी एकाएक उपेक्षा नहीं करनी चाहिए अपितु शोध करना चाहिए। भुवन का विषय अति विस्तृत है। यहाँ उसका संक्षेप में दिग्दर्शन कराया है। **डॉ. सुरेन्द्र कुमार**

मृत्यु सूक्त-३४

प्रवचनकर्त्ता- डॉ. धर्मवीर

लेखिका - सुयशा आर्य

परोपकारिणी सभा के पूर्वप्रधान डॉ. धर्मवीर जी के वेद-विज्ञान के अन्तर्गत प्रसारित व्याख्यानों की जनोपयोगिता को ध्यान में रखकर 'परोपकारी' में प्रकाशित किया जा रहा है। व्याख्यानों के लेखन का कार्य उनकी ज्येष्ठ पुत्री सुयशा आर्य कर रही हैं। -सम्पादक

आरोहतायुर्जरसं वृणाना अनुपूर्वं यतमाना यतिष्ठ।
इह त्वष्टा सुजनिमा सजोषा दीर्घमायुः करति जीवसे वः।।

यह ऋग्वेद के दशम् मण्डल के १८ वें सूक्त का छठा मन्त्र है। हम वेद ज्ञान के प्रसंग में इस मन्त्र पर विचार कर रहे हैं। हमने पीछे इस मन्त्र पर विचार करते हुए देखा कि हमारी शरीर की अवस्थायें स्वाभाविक हैं, और यदि हम दीर्घ आयु की कामना करते हैं तो ये अवस्थाएँ अनायास आती हैं, पड़ाव के रूप में पड़ती हैं। मन्त्र की शब्दावली बड़ी रोचक है। **आरोहतायुर्जरसं वृणाना**, हम आयु की ऊँचाई को चढ़ें, **जरसं वृणाना**= वृद्धावस्था को वरण करते हुए, स्वीकार करते हुए, चाहते हुए।

मनुष्य की प्रवृत्ति होती है, वह परमेश्वर की दी हुई हर चीज से असहमति रखता है और उसको पीछे ले जाने का यत्न करता है। अगर मेरी चीज अभाव में चली गयी तो मैं उसे भाव में बदलूँ, पैर टूट गया है तो उसको मैं ठीक कराऊँ, उसके लिए कोई उपाय करूँ, यह अलग चीज है लेकिन जो मैं हूँ नहीं, वैसा 'लगूँ' यह इच्छा ही दुःख का कारण है। मनुष्य सोचता है लोग मुझे सदा युवा समझें, वह इसके लिए यत्न भी करता है। लेकिन वेद कहता है, तुम उसके लिए यत्न मत करो, इस बात के लिए यत्न करो कि तुम युवा रहो। युवा लगने में कोई लाभ नहीं है। आपको तो मिथ्या ज्ञान, गलतफहमी हो नहीं सकती क्योंकि बाल तो आपने रंगे हैं, इसलिए आपको तो पता है कि आपके बाल सफेद हैं, रही बात कि दूसरे को काले दिख रहे हैं तो यह धोखा है। जो है नहीं वो आप दिखना चाह रहे हैं। यह एक मनोविज्ञान है। मनुष्य युवा दिखने के लिए प्रयत्न करता है। वेद कहता है युवा दिखो मत, युवा रहो। युवा रहने के लिए प्रयत्न करो।

आप युवा दिखने के लिए प्रयत्न क्यों करते हो? युवा दिखने के लिए प्रयत्न करने वाला आदमी दुर्बल होता है, उसकी परमेश्वर से असहमति होती है। उसने आपको आँख से, कान से, त्वचा से यदि असमर्थ बनाया तो समर्थ बनने का यत्न करना चाहिए, लेकिन यदि असमर्थ बनाया तो समर्थ दिखने का यत्न करने से लाभ क्या है? लाभ तो समर्थ होने से है। इसलिए जो कुछ काम हम दिखने के लिए करते हैं, वो भी अपने दिखने के लिए नहीं, दूसरे को दिखाने के लिए करते हैं, उससे हमारे जीवन में कोई उन्नति नहीं होती, कोई प्रगति नहीं होती, कोई लाभ नहीं होता, कोई सुख नहीं मिलता। मन्त्र कहता है- **आरोहतायुर्जरसं वृणाना अनुपूर्वं यतमाना यतिष्ठ**= यदि आप प्रयत्न करोगे तो परमेश्वर आपकी सहायता करेगा। यहाँ एक रोचक शब्द है **'त्वष्टा'** और त्वष्टा इस मन्त्र का देवता है।

मन्त्र क्या कहता है? मन्त्र का आशय क्या है? यह जानने के लिए जिस जानकारी की आवश्यकता है, वह है कि इस मन्त्र का देवता क्या है, इसका ऋषि क्या है, इसका छन्द क्या है? ऋषि तो इसलिए जानने की आवश्यकता होती है क्योंकि ऋषि एक तरह से वह पात्र है जो बोल रहा है, जो वक्ता की भूमिका निभा रहा है। वह मौलिक भी हो सकता है, वह नैमित्तिक भी हो सकता है। जब कोई व्यक्ति मन्त्र पढ़कर, मन्त्र का स्वाध्याय करके बोल रहा है तो उसका ऋषित्व जो है वह मौलिक नहीं है, अर्जित है, उपार्जित है, नैमित्तिक है और मन्त्र के शब्द में जो बात कह रहा है, जो शब्दावली है, उस मन्त्र का जो

प्रवक्ता है, जिसने मूल रूप से मन्त्र कहा है वह जो ऋषि है, वह परमेश्वर है। उसका कौन सा गुण इस मन्त्र में बताया जा रहा है वह हम उसके ऋषि से देखते हैं। जब हम ऋषि और देवता को समझ लेते हैं तो हमें मन्त्र का आशय समझना सरल हो जाता है। इस मन्त्र का देवता **'त्वष्टा'** है, ऋषि **यामायनः** है, यम से जुड़ा हुआ है अर्थात् यम मृत्यु का देवता है, मृत्यु का नाम है यम। स्वामी जी महाराज कहते हैं यम परमेश्वर है। इसकी व्याख्या करते हुए जब कठोपनिषद् की चर्चा करते हैं तो उसमें ऋषि ने लिखा है कि जो यम है, वह परमात्मा है और नचिकेता जीवात्मा है और उन दोनों का जो संवाद है वह परमात्मा और जीवात्मा के बीच का संवाद है। यह बात को समझने के लिए है। वैसे ही इस मन्त्र में जो देवता है वह **त्वष्टा** है।

जो तक्षण का अर्थात् छीलने का काम करता है, वेद उसे त्वष्टा कहता है। सामान्य रूप से जो बढ़ई है, वह त्वष्टा है क्योंकि वह छीलकर कोई चीज प्रस्तुत करता है। इसलिए जो-जो रचना के काम हैं, निर्माण के काम हैं, वे सब त्वष्टा के हैं। कहीं दु:खों का छेदन करने वाले को त्वष्टा कहा है, कहीं रचना करके किसी चीज को सुन्दर बनाने वाले को त्वष्टा कहा है, बादल को तोड़कर वर्षा कराने वाले सूर्य या बिजली को त्वष्टा कहा है। कर्म को जो भी, जिस समय कर रहा है, वह त्वष्टा के नाम से जाना जाता है। इस मन्त्र में भी त्वष्टा के नाम से देवता को पुकारा गया है।

कहता है **इह त्वष्टा सुजनिमा सजोषा**- आपके पास ऐसा करने के लिए साधन हैं। साधन कैसे हैं? एक तो स्वयं व्यक्ति है जो आपको साधनों को देने वाला है, दूसरे वे साधन दिए हुए हैं जिनका आप उपयोग कर सकते हो और ऐसा करके आपको वह चीज प्राप्त हो सकती है, जो आप प्राप्त करना चाहते हो। आप वार्धक्य में भी युवावस्था को देखना चाहते हो, युवावस्था को प्राप्त करना चाहते हो तो वह मिल सकती है। कैसे मिल सकती है? तो कहता है कि इसका देनेवाला त्वष्टा आपके पास है। वह नाना रूपों को धारण करता है, धारण करवाता है। इस जीवन को बनाने का काम हमारा त्वष्टा परमेश्वर कर रहा है। वह त्वष्टा सदा हमारे साथ रहने वाला है।

मन्त्र में जो शब्द हैं उनका गहरा एवं आंतरिक अर्थ है, यदि वह समझ में आया तब मन्त्र समझ में आता है। यदि आप उसकी गहराई में नहीं पहुँचे तो आपको समझ में नहीं आता। जैसे इसी मन्त्र में **'त्वष्टा'** का अर्थ यदि आप **'बढ़ई'** कर लें, तो बढ़ई की इस मन्त्र में आप संगति क्या लगायेंगे? कोई संगति नहीं लग सकती। **यह बढ़ई आपके साथ है**-इससे आपका कोई काम या अर्थ सिद्ध होने वाला नहीं है। तो त्वष्टा का अर्थ है, जो किसी चीज को गढ़ता है, अच्छा रूप देता है, सुन्दर बनाता है। बढ़ई भी लकड़ी से किसी चीज को सुन्दर बनाता है, शिल्पकार पत्थर से किसी चीज को सुन्दर बनाता है। जो भी काम को सुन्दर रूप में करता है, वह त्वष्टा है। जो छीलता है, काटता है, तोड़ता है, जोड़ता है, किसी चीज को रूप देता है, स्वरूप देता है, सुन्दरता देता है, भाव देता है, वह त्वष्टा है, वह त्वष्टा हुए बिना ये सब काम नहीं कर सकता। इस संसार में जितने काम हो रहे हैं, वे हजारों, लाखों, करोड़ों तरह के हैं और उनको वैसा ही अच्छा बनाने वाला, वैसा सुन्दर रूप देने वाला त्वष्टा है। परमेश्वर का त्वष्टा रूप है जो समस्त संसार को बना रहा है। वह त्वष्टा ही हमारे जीवन को भी बनाने वाला है। **इह त्वष्टा**, वह त्वष्टा हमारे पास है। यदि हम उसको अपने पास देखें, ध्यान में रखें, तो हमें कोई चीज अनायास ही मिल जाती है। जैसे कोई जानकार व्यक्ति हमारे साथ रहता है, तो वह हमको अच्छी सलाह, अच्छा मार्गदर्शन दे देता है, हमें परेशानी नहीं होती और हम सहज भाव से उस कार्य को कर लेते हैं। मैं रास्ते को जानता नहीं हूँ, लेकिन एक व्यक्ति रास्ते का जानने वाला मेरे साथ है तो मेरी यात्रा असंदिग्ध और निरापद हो जाती है। मैं बिना चिन्ता के उस रास्ते पर चलता रहता हूँ, सहज भाव से जाता हूँ, मुझे वहाँ कोई शंका नहीं होती कि आगे किस रास्ते से मुड़ूँगा, कौन से शहर से किधर जाऊँगा। तो मन्त्र कहता है कि यदि आप जीवन को सुधारना चाहते हो, जीवन को अच्छा बनाना चाहते हो तो आपको एक उपाय करना पड़ेगा कि इस जीवन को जिसने बनाया है, आपको उसका साथ लेना पड़ेगा। जीवन को मैं अपने हिसाब से चलाना चाहता हूँ, मुझे जैसा समझ में आता है, वैसा चलाता हूँ, यह तो बिना गाड़ी चलाना सीखे, गाड़ी चलाने जैसी बात है, इसमें कुछ भी गलत हो सकता है, कहीं भी गाड़ी गिर सकती है, कुछ भी टूट-फूट हो सकती है। लेकिन जब किसी जानकार के साथ आप गाड़ी चलाना सीखते हैं,

दक्ष बनते हैं और फिर गाड़ी चलाते हैं तो आप अच्छी गाड़ी चलाने वाले बन जाते हैं।

लोग कहते हैं, जी क्या लाभ है भगवान् का भजन करने से, भगवान् की उपासना करने से? लाभ तो कुछ भी हो सकता है, भले ही आपको प्रत्यक्ष न दिखाई दे, लेकिन इतनी समझ तो हम सबमें है कि जो जानता है, यदि उसके साथ हम रहेंगे तो उसकी जानकारी का लाभ हमें अवश्य मिलेगा। इसीलिए हमारे शास्त्रों ने कहा है कि यदि आपको जीवन ठीक चलाना है, आपको अपनी दिनचर्या ठीक रखनी है, जीवन में आपको स्वास्थ्य का लाभ करना है तो फिर जो इन सब चीजों को समझता है उसका साथ पकड़िए। शायद इसीलिए एक बड़ी सुन्दर बात मनु महाराज ने कही है- **ऋषयो दीर्घसन्ध्यत्वाद्दीर्घमायुरवाप्नुयुः। प्रज्ञां यशश्च कीर्तिं य ब्रह्मवर्चसमेव च...।** बात बड़ी विचित्र लगती है। विचित्र इस अर्थ में लगती है कि आयु को बड़ा करने के लिए कोई कहे कि आप अच्छा भोजन करो तो हमारी समझ में आता है, कोई दवा खाओ, समझ में आता है, व्यायाम करो, टहलो यह समझ में आता है, लेकिन कोई यह कहे कि संध्या किया करो तो आप स्वस्थ हो जाओगे, यह बड़ा अटपटा लगता है। संध्या करने से स्वास्थ्य का क्या सम्बन्ध है? कुछ भी समझ में नहीं आता। लेकिन मनु महाराज कह तो रहे हैं- **ऋषयो दीर्घसन्ध्यत्वाद्दीर्घमायुरवाप्नुयुः** बड़ी सीधी शब्दावली है, बड़े स्पष्ट शब्द हैं। कह रहे हैं, ऋषि लोग लम्बी संध्या करते थे, इसलिए उन्होंने लम्बी आयु भी प्राप्त की और इतना ही नहीं, **प्रज्ञां यशश्च कीर्तिं च ब्रह्मवर्चसमेव च** उन्होंने प्रज्ञा-बुद्धि को भी इस उपासना से प्राप्त किया, यश को प्राप्त किया, कीर्ति को प्राप्त किया और ब्रह्मवर्चस को प्राप्त किया, ब्रह्म तेज को धारण किया। योग दर्शनकार कहते हैं ध्यान करने से- **ऋतम्भरा तत्र प्रज्ञा।** अर्थात् स्मृति जब परिशुद्ध हो जाती है, वहाँ प्रज्ञा ऋतम्भरा बन जाती है। अब समझ में आ जाएगा कि उपासना करने से बुद्धि कैसे बढ़ती है। उपासना करने से हमारे मस्तिष्क के, मन के मैल दूर हो जाते हैं, जो दोष हैं वे दग्ध हो जाते हैं। **दह्यन्ते ध्मायमानानां धातूनां हि यथा मलाः। तथेन्द्रियाणां दह्यन्ते दोषाः प्राणस्य निग्रहात्।** जैसे धधकती हुई आग में किसी धातु को डालने से धातु के जो दोष हैं, मल हैं, वे निकल जाते हैं, धातु का शुद्ध रूप निखर कर आ जाता है, उसी प्रकार प्राणायाम करने से हमारी इन्द्रियों के दोष निवृत्त हो जाते हैं। तो यह उपासना जो कर्म है हमारा, इससे हमारी बुद्धि निर्मल और पवित्र हो जाती है। शरीर की निर्मलता इसकी आयु को, स्वास्थ्य को बढ़ाने वाली होती है और बुद्धि की निर्मलता मस्तिष्क को शान्त और सहज करने का आधार बनती है। मनु का निश्चित भाव है कि ऋषि लोग लम्बे काल तक उपासना करते थे इसीलिए उनकी आयु बड़ी हुई।

एक तो उनका आसन-प्राणायाम द्वारा शरीर का ठीक होना और ध्यान के द्वारा मन का, चित्त का, बुद्धि का निर्मल होना। जब बुद्धि निर्मल होगी तब उसके अन्दर कोई अभाव, कोई राग, कोई द्वेष, कोई ईर्ष्या, कोई काम, कोई क्रोध कुछ नहीं होगा। क्योंकि यह काम, क्रोध, राग, द्वेष, लोभ, मोह, ये सब अशुद्धियाँ है, मलिनतायें हैं और यह मलिनता हमें कमजोर करती है, बीमार करती है, रोगी करती है, समाप्त करती है। इसलिए मनु महाराज ने कहा कि ऋषि लोग लम्बे काल तक उपासना करते थे और उनका शरीर-बुद्धि निर्मल हो जाती थी और इस निर्मलता से वो दीर्घ आयु को प्राप्त करते थे।

मन्त्र में उस जीवन को बनाने वाले व्यक्ति के रूप में ईश्वर का 'त्वष्टा' संबोधन है और उस त्वष्टा के साथ रहकर के हम अपने जीवन को श्रेष्ठ बना सकते हैं।

परोपकारिणी सभा द्वारा आयोजित आगामी कार्यक्रम

१. १५ से २२ सितम्बर, २०१९- **योग-साधना शिविर**

२. ०१, ०२, ०३ नवम्बर २०१९- **ऋषि मेला**

ऋषि उद्यान में होने वाले कार्यक्रमों के लिए

सम्पर्क सूत्र- ०९४६०४२११८३, ०१४५-२४६०१६४, ०१४५-२६२१२७०

कुछ तड़प-कुछ झड़प

प्रा. राजेन्द्र 'जिज्ञासु'

वैदिक आस्तिकवाद की एक मौलिक देन- दिन में हैदराबाद के आर्य विद्वान् श्री पं. प्रियदत्त जी से चलभाष पर हुई बातचीत का मन में संस्कार बना बैठा था कि मैं रात्रि स्वप्न में उनके बुलावे पर आर्यसमाज महर्षि दयानन्द मार्ग (सुल्तान बाज़ार) पहुँच गया। वहाँ पण्डित जी से सूचना पाकर उनके कुछ प्रेमी धर्मचर्चा करने समाज मन्दिर पहुँच गये। ये सभी चार-पाँच सज्जन बहुत विचारशील मुसलमान थे। उनमें से एक मौलाना बोले, ''हम मुसलमान भी एक खुदा के मानने वाले और आप आर्य लोग भी एक ही परमात्मा की उपासना का डंका बजाते हैं। हम सबको मिलकर एकेश्वरवाद की-उसी की उपासना का प्रचार करना चाहिये।''

इस पर उनके साथी दूसरे मौलाना बोले, हाँ! हाँ! हमें जन-जन में प्रचार करना होगा कि हमारे खुदा ने हमें उत्पन्न करके जीवन दिया और हम जन्म से लेकर अब तक दिल की धड़कन, नाड़ी और श्वासों के चलने से जीने का प्रमाण देते चले आ रहे हैं।

इस पर मैंने कहा, ''आपका यह कथन सत्य है, परन्तु यह तो इस्लाम का वैदिक रंग है। आपका ख़ुदा तो आपसे जुदा और दूर सातवें आसमान पर है। आप कह रहे हैं कि उसने उत्पन्न करके छोड़ दिया है। वेद तो कहता है कि हमारा और हमारे भगवान् का व्याप्य-व्यापक सम्बन्ध है। प्रभु हमारे अंग-संग है। वह छोड़ता कहाँ है? वह चाहे भी तो हमें छोड़ नहीं सकता। मित्रो! एकेश्वरवाद का प्रचार करना है तो वैदिक आस्तिकवाद को आओ सब मिलजुल कर संसार में प्रचारित करें। यह वेद के आस्तिकवाद की एक मौलिक देन है। यह सुनकर वे गद्‌गद् हो गये।'' मेरी आँख खुल गई और मैंने चार जुलाई को प्रातः साढ़े बारह बजे पं. भगवद्दत्त जी से प्राप्त सीख का पालन करते हुये तड़प-झड़प के लिये लेखबद्ध कर दिया। मन कहाँ से कहाँ ले गया! हमारे पाठकों को वैदिक चिन्तन का यह प्रसाद बहुत अच्छा लगेगा।

देश-विभाजन, डॉ. श्यामप्रसाद मुखर्जी और पं. रुचिराम- हमने कई वर्ष पूर्व अपने एक ग्रन्थ में सन् १९४१ की जनगणना, देश-विभाजन की अंग्रेज व जिन्नाह की योजना से पश्चिमी बंगाल, आसाम तथा पूर्वी पंजाब को बचाकर भारत का अंग बनाने के लिये बहुत विस्तार से प्रामाणिक प्रकाश डाला था। उस ग्रन्थ का नया संस्करण शीघ्र आने वाला है। जिन्नाह की योजना से पश्चिमी बंगाल आदि की सहस्त्रों वर्ग किलोमीटर भूमि बचाने का सारा श्रेय अमर हुतात्मा डॉ. मुखर्जी, पं. रुचिराम आर्योपदेशक आदि कुछ महान् देशभक्तों को प्राप्त है। यह भू-भाग देश के लिये बचाया जा सका तो इसका श्रेय जिन विभूतियों को जाता है उन सबका हम आगे उल्लेख करेंगे। काँग्रेस तो सत्ता प्राप्ति के लिये उतावली होकर सब कुछ थाल में रखकर जिन्नाह को भेंट करने को तैयार बैठी थी। यह कहानी तो लम्बी है, परन्तु यहाँ संक्षेप से देंगे।

सन् १९५२ में एक बार संसद में पं. नेहरू ने डॉ. मुखर्जी पर चोट करते हुये कहा था " You partitioned India." डॉ. श्यामप्रसाद मुखर्जी ने तब तपाक से कहा, "You partitioned India. I partitioned Pakistan." तब समाचार-पत्रों में जो कुछ पढ़ा आज पर्यन्त स्मरण है। बस डॉ. मुखर्जी ने एक बार ऐसा संकेत दिया था। पूरी कहानी ऐसे है। सन् १९४१ की जनगणना के सब आंकड़े देखे, उन दिनों आर्यसमाजी नेता तथा स्वतन्त्रता-संग्राम में काँग्रेस के भी एक अग्रणी महापुरुष रहे स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी ने कहना आरम्भ कर दिया, ''काँग्रेस मुस्लिम लीग को पाकिस्तान भेंट कर देगी।'' डॉ. राजेन्द्र प्रसाद जी की उपस्थिति में पुरजोश शब्दों में आपने कहा, ''रावी नदी के पार कोई हिन्दू सिख नहीं रह सकेगा। भयङ्कर रक्तपात होगा।'' तब स्वामीजी ने जगगणना के आँकड़े देखकर अपने कई विश्वस्त नेताओं से बातचीत की और कुछ प्रमुख नेताओं के पास अपने शिष्य पं. रुचिराम जी को भेजा। ऐसे नेताओं में श्रीयुत जुगलकिशोर बिरला, डॉ. श्यामाप्रसाद मुखर्जी तथा मास्टर तारासिंह जी थे। सबको बताया और सुझाया कि प्रदेशों का विभाजन नहीं हो रहा। देश का विभाजन जनसंख्या के आधार पर हो रहा है।

अतः जहाँ-जहाँ मुसलमान बहुसंख्या में हैं वही क्षेत्र पाकिस्तान में जा सकता है और जहाँ-जहाँ हिन्दू व हिन्दू-

सिख मिलकर बहुसंख्या में हैं वह ज़िले भारत में रहेंगे। डॉ. मुखर्जी मास्टर तारासिंह सबको यह बात जँच गई। इन्हें इस दिशा में आगे आकर कार्य करने को कहा गया। सेठ बिड़ला ने सब आँकड़े निकाल कर तैयार रखने के लिये पूरा आर्थिक सहयोग दिया। मास्टर तारासिंह जी उस समय उदास, चिन्तित व परेशान, सोच की मुद्रा में बैठे थे। पगड़ी उतारकर सामने मेज पर रखी थी। यह योजना व आँकड़ों की बात सुनकर उछलकर बोले, ''यह किसने सुझाई?''

पं. रुचिराम ने स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी का नाम लिया तो अपनी पगड़ी प्यार से रुचिराम जी के सिर पर रख कर कहा, ''स्वामी जी भी तो हमारे (सिखों) हैं।'' रुचिराम जी बोले, ''तो आप भी तो हमारे हैं।'' पंजाब में रेडक्लिफ़ कमीशन पंजाब के विभाजन के लिये बनाया गया। दीवान बद्रीदास उसके सामने हिन्दुओं का केस रखने वाले प्रमुख वकील थे। श्री हरनामसिंह (यदि हम चूक नहीं कर रहे) जी ने सिखों का पक्ष रखा। इसी प्रकार सिलहट को छोड़कर सारा आसाम बचा लिया गया। यह है देश-विभाजन के समय पश्चिमी बंगाल व पूर्वी पंजाब को बचाने की संक्षिप्त कहानी। जिन्नाह का प्रदेशों के बहुमत के आधार पर पाकिस्तान में पंजाब बंगाल को पूरा-पूरा हड़पने का सपना चूर-चूर हो गया।

जब सेना को गुप्तचर चाहिये था- देश का विभाजन हुआ तो कश्मीर पर पाकिस्तान ने चढ़ाई कर दी। तब डॉ. मुखर्जी नेहरू मन्त्रिमण्डल में थे। सेना को पाकिस्तानी सेना का प्रतिकार करने के लिये एक कुशल गुप्तचर पाकिस्तान भेजना था। केन्द्रीय मन्त्रिमण्डल में डॉ. मुखर्जी से भी यह चर्चा की गई तो आपने पं. रुचिराम जी का नाम सुझाया। तब सार्वदेशिक सभा द्वारा पण्डित जी से सरकार ने सम्पर्क साधा। डॉ. मुखर्जी का पत्र लेकर पं. रुचिराम सरदार स्वर्णसिंह (पंजाब में मन्त्री थे) से मिले कि मुझे पंजाब सरकार सीमा पार करवाये। वह पत्र पं. रुचिराम ने सुरक्षित रखा और हमें भी दिखाया था।

आपातकाल में जनसंघ के नेताओं की एक बैठक में श्री ओमप्रकाश त्यागी ने इस पत्र की चर्चा कर दी। आपको हमारे ग्रन्थ से यह पता चला था। तब जनसंघ के नेता रात्रि समय पं. रुचिराम जी के घर गये। उनको वह पत्र दिखाने को कहा। पण्डित जी वह पत्र लेकर जनसंघी नेताओं की बैठक में गये। एक-एक नेता ने उस पत्र को श्रद्धा से देखा, पढ़ा और सिर आँखों पर रखा। हमने अत्यन्त संक्षेप से डॉ. मुखर्जी की इस अविस्मरणीय महान् सेवा की कहानी यहाँ दी है। स्वामी जी की डायरियों से जो जानकारी मिली वह भी ग्रन्थ में दी गई है।

पं. लोकनाथ जी के जीवन के कुछ पृष्ठ- श्रद्धेय पं. लोकनाथ जी बहुमुखी प्रतिभा के एक कर्मठ और प्रभावशाली विद्वान् थे। आपको कई नगरों तथा दूरस्थ स्थानों को केन्द्र बनाकर वैदिक धर्म-प्रचार का सौभाग्य प्राप्त रहा। ये सन् १९३१ की घटनायें हैं कि आप पिण्ड दादन खाँ (नाम जैसा पढ़ा गया) को केन्द्र बनाकर आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब की ओर से प्रान्त भर में प्रचार करते थे। जिस क्षेत्र को केन्द्र बनाकर कार्यरत थे वहाँ आपके प्रचार के प्रभाव से आर्यसमाज की शक्ति व प्रतिष्ठा बहुत बढ़ती गई। आर्यसमाज का विरोध करने वाले पौराणिकों से आर्यसमाज का बढ़ता हुआ गौरव सहा न गया।

विरोधी शास्त्रार्थ में तो पण्डित जी का सामना कर नहीं सकते थे। एक बार जब पण्डित जी पिण्ड दादन खाँ से प्रचारार्थ बाहर थे तो विरोधियों ने लाहौर से आपके घर तार दे दिया कि आपकी हृदयगति बन्द हो गई है फिर समाचार पत्रों में छपवा दिया कि आप पौराणिक बन गये हैं। पण्डित जी ने इस पर कोर्ट में केस कर दिया जो हाईकोर्ट तक पहुँचा। पौराणिकों की इस कपटपूर्ण करतूत का दण्ड 'बंगबासी' कलकत्ता के सम्पादक को भुगतना पड़ा। पं. लोकनाथ जी की जय-जयकार होने लगी।[१] आर्यसमाज की कीर्ति को इससे और चार चाँद लग गये।

कुछ इधर की कुछ उधर की- मास्टर आत्मारामजी के सार्वजनिक जीवन के आरम्भिक काल में १५ जुलाई सन् १८९८ में आर्यसमाज लक्ष्मण नगर अमृतसर में उनका एक बहुत बड़ा शास्त्रार्थ **ईश्वरीय ज्ञान** विषय पर मौलवी सनाउल्लाजी के साथ कई दिन तक होता रहा। यह नगीना में शास्त्रार्थ से पाँच वर्ष पहले हुआ था। पं. लेखराम जी के बलिदान के पश्चात् यह एक अत्यन्त प्रभावशाली शास्त्रार्थ था जो 'आर्य मुसाफिर' मासिक के कई अंकों में (लगातार नहीं) छपता रहा।

महर्षि दयानन्द जी ने काँग्रेस के संस्थापक A.O.

Hume (ह्यूम) के ऋषि के वेद-भाष्य पर आक्षेपों का जिस शैली व सूझबूझ से कलकत्ता के एक पत्र में उत्तर दिया श्रद्धेय आत्माराम जी ने महर्षि की उसी शैली में मौलवी सनाउल्ला जी के आक्षेपों के उत्तर-प्रत्युत्तर देकर अपने पाण्डित्य की धाक जमाई। मौलवी शिवराज द्वारा इसका अनुवाद भी लाजपतराय जी ने छपवा दिया है।

मूल उर्दू लेखों से अनुवाद का मिलान करके इसका सार ३०-३२ पृष्ठ में तैयार करके छपवाने की सोची है। श्री लाजपतराय ने अपनी पहली ही टिप्पणी में "कुरान, बाइबिल, वेद और जन्दअवस्ता" लिखने की चूक कैसे कर दी! जब सारा संसार साक्षी दे रहा है, मान रहा है तो फिर पहले वेद का ही उल्लेख होना चाहिये था।

अब शास्त्रार्थ महारथी कहलवाने की चाहना तो बहुत करते हैं, परन्तु पं. लेखराम, स्वामी दर्शनानन्द, पूज्य आत्माराम जी, मान्य देहलवी जी व ठाकुर अमरसिंह जी के शास्त्रार्थों के मर्म को समझने वाले दो-चार अधिकारी विद्वान् समाज में नहीं दिखते। त्रैतवाद पर आज तक के पुराने विद्वानों के मौलिक तर्कों को जानकर इस विषय पर लेख लिखने वालों का अभाव खलता है। शास्त्रार्थ महारथी बड़े चाव से बलिये पर शास्त्रार्थ जो किये गये उनको तो भली प्रकार से समझने वाले दो-चार तो होने चाहिये।

इतिहास पलटकर रखने वाले महात्मा दुर्गाप्रसाद जी- हमें आज महात्मा दुर्गाप्रसाद जी के जीवन तथा उपलब्धियों पर कुछ नहीं लिखना। इतिहास का केवल एक विस्मृत पृष्ठ आर्यों के ध्यान में लाकर नई पीढ़ी में उत्साह का संचार करना है। यह उस समय की घटना है जब लाला लाजपतराय, वीर अजीतसिंह, मेहता आनन्द किशोर आदि बीसियों आर्यों पर अभियोग चलाकर, यातनायें देकर अंग्रेज़ों ने पटियाला स्टेट के दिलजले दीवाने छोटे-बड़े आर्यों को जेलों में डाल दिया। बस एक 'किरपा पुत्र' नाम का घुमक्कड़ आर्यवीर लाख यत्न करने पर भी सरकार के गुप्तचरों व पुलिस के हाथ न लगा। यह कौन था? यह हम इस प्रसंग की समाप्ति पर बतायेंगे।

पटियाला केस के समय मिर्ज़ाई, पौराणिक, नास्तिक, देवसमाजी, मुसलमान, सरकारभक्त सिख व मुसलमान संस्थायें तथा प्रेस आर्यसमाज को कुचलने के लिये सरकार पर दबाव बना रहे थे कि आर्यसमाज एक राजनीतिक संस्था है इसको कुचलना ही चाहिये। तब यह समझा जा रहा था कि पटियाला केस एक test केस (प्रयोग मात्र) है। इसके पश्चात् गोराशाही अन्य-अन्य राज्यों में भी ऐसे ही केस चलायेगी। एक ओर महात्मा मुंशीराम, दीवान बद्रीदास, महाशय कृष्ण, आचार्य रामदेव पटियाला के आर्यों की रक्षा के लिये सिर धड़ की बाजी लगाये बैठे थे और उधर प्रसिद्ध वैदिक विद्वान् लेखनी के धनी श्री महात्मा दुर्गाप्रसाद जी ने उस समय के लाट साहब को (गवर्नर को) पत्र लिखकर पूछा, "क्या सरकार की ऐसी ही इच्छा है?" लाट साहब को इस बात से इन्कार करना पड़ा। इधर इस पत्र का प्रेस में छपना था और उधर हवा की दिशा ही बदल गई। आर्यसमाज के विरोधियों की सारी हवा निकल गई। महात्मा दुर्गाप्रसाद जी के पत्र ने इतिहास पलट कर रख दिया।

आन्दोलनों के ऐसे प्रसंग- उधर जेल में (कैम्प जेल बनाकर) आर्यवीर सड़ रहे थे। बन्दी आर्यों की हुंकार देश भर में गूञ्ज रही थी। महात्मा मुंशीराम पल-पल में नया इतिहास रच रहे थे और वह 'किरपा पुत्र' नाम का आर्यवीर कौन था? कहाँ का था? बात यह है कि तब पंजाब में उर्दू का बोलबाला था। आर्यसमाजों के पत्र-व्यवहार में फ़ारसी लिपि में लिखा "किरपा पत्र मिला" या "किरपा पत्र आया" लिखा होता था। उर्दू में पुलिस वाले इसे "किरपा पुत्र" पढ़कर पूछताछ करते हुये परेशान थे। समाजें "किरपा पुत्र" का अता-पता नहीं बता रहीं थीं। धुरी, बरनाला, बठिण्डा, रामाँ, तलवण्डी साबो, पटियाला सब छान मारे, परन्तु महात्मा मुंशीराम के आर्यों का किरपा पुत्र पुलिस की पकड़ में न आया। बीसियों पत्र विभिन्न आर्यसमाजों से पुलिस ने अधिकार में ले रखे थे। पटियाला केस की विजय के भय भूत को पुलिस ने मन और मस्तिष्क से उतार दिया। आन्दोलनों के ऐसे रोचक प्रसंग भी जनता में स्फूर्ति का संचार किया करते हैं।

जब तक हिन्दू समाज के रोग रहेंगे- मोदी सरकार आतंकवाद तथा अलगाववाद के उन्मूलन के लिये प्रशंसनीय व साहसिक कार्य कर रही है। देश की एकता व अखण्डता के लिये घातक धारा ३७० जिस दिन समाप्त होगी तो वह दिन देश के लिये गौरव और अभिमान का दिवस होगा। देशहित चाहने वाला एक-एक नागरिक सरकार को बधाई व धन्यवाद देगा। इसके साथ ही सरकार को देश से अन्धविश्वासों व

सामाजिक रोगों के दूर करने के लिये दृढ़ता से कुछ उपाय करने होंगे। इस समय तो सरकार पग-पग पर अन्धविश्वासों व हिन्दुओं के सामाजिक रोगों के निराकरण करने की बजाय उल्टा इन्हें खाद पानी दे रही है। इन सामाजिक रोगों की तुष्टि-पुष्टि करने से देश न तो स्वस्थ, बलवान् और निर्भय बन सकेगा, इसके विपरीत पग-पग पर नई-नई समस्याओं का देश को सामना करना पड़ेगा।

एकेश्वरवाद को हिन्दू अपनाने से डरता है। इस समय की सरकार भी ईश्वरेतर की पूजा तथा असंख्य कल्पित भगवानों की पूजा के प्रचार में रस ले रही है। कोई संसद भवन को माथा टेक रहा है तो कोई अन्य-अन्य जड़ उपास्य वस्तुओं व स्थानों को सिर नवा रहा है। अखिल विश्व को एक जैसे नियमों में बाँधने वाले भगवान् से कामनायें पूरी करवाने की विनती न करके अपने द्वारा गढ़े गये निर्जीव पूजाघरों को हिन्दू महिमामण्डित करके अपनी महिमा घटा रहा है। आज भी मन्दिरों के मानव के बनाये भगवानों की रक्षा एक समस्या बनी हुई है।

हम बाल्यकाल से अमरनाथ यात्रा के चमत्कार सुनते-पढ़ते आ रहे हैं। अब इसे नया नाम देकर हिन्दू समाज अपना अवमूल्यन कर रहा है। 'बर्फानी बाबा' कहने वालों से इसकी देन व देश-सेवा, शिक्षा तथा सिद्धान्तों के बारे में कुछ प्रकाश डालने को कहा जावे। कश्मीरी हिन्दू लाखों की संख्या में उखाड़ दिये गये। उजाड़ दिये गये। यह 'बर्फानी बाबा' मूकदर्शक बनकर देश की व हिन्दुओं की दुर्गति देखता रहा। साठ सहस्र सैनिकों के बलबूते पर अमरनाथ यात्रा निकालकर माननीय अमित शाह तथा देश के प्रधानमन्त्री जी तो इसे अपनी उपलब्धि कह सकते हैं। आये दिन इस बाबा की बन्द आँखों के सामने असंख्य नागरिक व सैनिक मारे जाते रहे, बम विस्फोट होते रहे। यह बम-बम भोले मच्छर की एक टाँग भी न तोड़ सका। इन भगवानों व बाबों की रक्षा हमको करनी पड़ती है। ये हमारे रक्षक नहीं।

ऐसे ही आक्रमणकारी काशी, मथुरा, सोमनाथ आदि मन्दिरों पर चढ़ाई करके लूटमार व हत्यायें करके देश का मान-मर्दन करते रहे। हमारे सामने रामचन्द्र जी और श्रीकृष्ण का आदर्श होगा तो देश सिर उठाकर आगे बढ़ेगा। ऊँची से ऊँची मूर्ति भी देश की रक्षा न कर सकेगी। शिवा, प्रताप, सरदार पटेल, नेता जी सुभाष और शहीद श्यामप्रसाद मुखर्जी के अरमान सीने में हम पालेंगे तो जी सकेंगे। क्या सरकार नहीं जानती कि श्रीराम, भरत, माता सीता सन्ध्या करते थे। माथा नहीं टेकते थे? कोई सुने न सुने हम खरी-खरी सुनाते रहेंगे। हनुमान चालीसा श्रीराम भारत के समय था ही नहीं। हनुमान को पूँछधारी बनाने का अन्धविश्वास कुछ-कुछ तो घटा है।

स्वामी श्रद्धानन्द शौर्य शताब्दी वर्ष पर- इससे पहले भी जलियाँवाला बाग रक्तिम काण्ड शताब्दी पर कुछ विशेष जानकारी देते हुये दो-तीन बार कुछ लिखा है। अमृतसर षड्यन्त्र केस के अभियुक्त श्री आर्यमुनि जी की अपील पर हाईकोर्ट ने उन्हें कारागार से मुक्त करने का आदेश दिया। २८ अप्रैल सन् १९३१ को 'प्रकाश' को अमृतसर से सूचना प्राप्त हुई के पाँच दिन बीत जाने पर भी वह अमृतसर नहीं पहुँचे। 'प्रकाश' साप्ताहिक तीन मई सन् १९३१ के पृष्ठ चार पर यह समाचार छपा मिलता है। ऋषि दयानन्द स्वराज्य आन्दोलन के जन्मदाता थे, इस विषय पर लिखने वाले अनेक हैं। हम गुमनाम बलिदानियों के लुप्त इतिहास का अनावरण करते रहते हैं। कोई लाभ उठाये या न उठाये हम अपना कर्त्तव्य निभा रहे हैं।

जब हुतात्मा सुखदेव की बहिन को स्कूल से निकाला गया- यह सन् १९३१ की घटना है। राजगुरु, भगतसिंह जी जैसे प्राणवीरों के साथ फाँसीदण्ड पाने वाले बलिदानी आर्यवीर सुखदेव जी की बहन लायलपुर के सरकारी स्कूल की छात्रा थी। इस त्रिमूर्ति की फाँसी के थोड़ा समय पश्चात् उस आर्य बाला को इस कारण स्कूल से निकाल दिया गया क्योंकि उसके माता-पिता परिवार राजनीतिक गतिविधियों में संलिप्त हैं। गोरे ईसाइयों की दया, न्याय व सेवा का यह कैसा सुन्दर उदाहरण है कि माता-पिता व परिवार के कारण अबोध बाला को दण्डित किया गया। आर्यसमाज ने इस क्रूरता के विरुद्ध आवाज उठाई। हमने इतिहास का यह लुप्त पृष्ठ मुखरित कर दिया है। 'प्रकाश' साप्ताहिक सात जून सन् १९३१ के अंक में यह समाचार छपा था।

टिप्पणी: १. द्रष्टव्य साप्ताहिक 'प्रकाश' लाहौर ३.५.१९३१ पृष्ठ छ:।

ऐतिहासिक कलम से....

सुधासिन्धु आर्याभिविनय पर मार्मिक चिन्तन

लेखक- जलियाँवाला बाग हत्याकाण्ड के हीरो डॉ. सत्यापाल जी की लेखनी से।

स्वामी श्रद्धानन्द शौर्य शताब्दी वर्ष और जलियाँवाला बाग हत्याकाण्ड शताब्दी की देश भर में कुछ-कुछ चर्चा सुनने में आ रही है। इस ऐतिहासिक वर्ष की महिमा के अनुरूप एक करणीय कार्य ने मेरा ध्यान खींच लिया है। 'परोपकारी' द्वारा आर्य जाति की सेवा करने का यह अवसर नहीं खोया जा सकता।

गाँधी युग के प्रथम सत्याग्रह में स्यालकोट (पंजाब) के सुप्रसिद्ध और गम्भीर विद्वान् लाला गणेशदास भी तब लाला लाजपतराय के साथ जेल में गये। उन्हें 'ए' श्रेणी की सुविधायें दी गईं। आपने सामान्य सत्याग्रही के रूप में बन्दी जीवन बिताने का निश्चय करके सब सुविधाओं का परित्याग किया। खाने के लिये सरसों का जो तेल मिलता था उसका संग्रह करते गये। रात्रि दीपक जलाकर उसके प्रकाश में आर्याभिविनय का भाष्य 'स्वराज्य पथ प्रदर्शक' प्रथम भाग सन् १९२४ में छपवा दिया। उसकी पठनीय भूमिका देश के निडर तपस्वी त्यागी नेता आर्य गौरव डॉ. सत्यपाल जी ने लिखी। इस सेवक ने डॉ. सत्यपाल जी के भी दर्शन किये तथा लाला गणेशदास के चरणों में बैठने का भी गौरव प्राप्त किया। स्वराज्य संग्राम की दूसरी पंक्ति के यह बलिदानी नेता डॉ. सत्यापाल किस कोटि का ऋषि भक्त था इसकी साक्षी उनका यह प्राक्कथन है। देश भर में इसके प्रचार-प्रसार में आर्यसमाज पूरी शक्ति लगा दे। - जिज्ञासु

मेरी यह मान्यता है कि जब किसी देश की अवस्था ऐसी हो जाती है कि उस पर शत्रु भी अश्रुपात करने पर विवश हो जायें तो भगवान् अपनी अपार कृपा से विशेष प्रकार की आत्माओं को जन्म देकर उस देश को सत्योपदेश देने का कर्त्तव्य उनको सौंप देता है। विश्व-इतिहास यही सीख देता है कि जब पाप का, बुराई का बोझ अत्यधिक हो तो उसे हल्का करने के लिये जन साधारण की चाल को बदल डालने के लिये और पुरानी चाल को छुड़ाने के लिये पवित्र, श्रेष्ठ आचरण की महान् विभूतियों ने दर्शन दिये हैं। वे अपनी अथाह शक्ति से हड़कम्प मचा देते हैं। लोग नदियों के प्रवाह को रोकते हैं, परन्तु ये महान् विभूतियाँ विचारों के सागर पर नियन्त्रण करती हैं। ऐसा करके ये संसार को अपने अस्तित्व का बोध व अनुभव करवाती हैं।

भारत में जब-जब भीड़ बनी, आर्यावर्त पर भी जब कभी विपदा आई है, हमारे देश पर जब-जब सङ्कट आये व छाये हैं, परमेश्वर ऐसा दया करते ही रहे हैं। पश्चिमी जगत् (योरोपीय जातियों) के भारत पर आक्रमण हो चुके थे। व्यापारी बनकर आये परन्तु शासक बन गये। हाँ! भारतीय अंग्रेजों के उपास्य बन रहे थे। अपनी प्रत्येक वस्तु से घृणा तथा **परायों के अन्धानुकरण से अनुराग बढ़ रहा था।**[१] ईश्वर तथा उसके सद्ज्ञान वेद से इन्कार का प्रबल आन्दोलन (लहर) हो रहा था। आर्यों की जान व प्राण तो पीछे डाल दिये (उपेक्षित) गये थे। आत्म का कल्याण उत्थान करने के लिये उपनिषदों व धर्मशास्त्रों का परित्याग कर लोग जाहन तथा मति के दीवाने बन रहे थे। इसका विषैला प्रभाव आर्य जाति के शरीर में बड़ी तीव्रता से फैल रहा था। लोग अपने पूर्वजों-वास्तविक पिता, पितामह का परित्याग करके नये माता-पिता को रिझाने में व्यस्त थे। भारत का धार्मिक आकाश अत्यन्त मेघ आच्छादित था। मेघ उसे ढक रहे थे। ऐसे समय में आवश्यकता थी श्री योगेश्वर कृष्ण का कथन सत्य सिद्ध हो। अत: ठीक अवसर पर **महर्षि दयानन्द** का आविर्भाव-प्रकाश हुआ।

भगवान् दयानन्द ने भारतवर्ष में एक नया रंग पैदा कर दिया। ऋषिवर दयानन्द ने नास्तिकता की लहर को रोक दिया है। भगवान् दयानन्द ने महाराज श्री रामचन्द्र तथा योगेश्वर कृष्णचन्द्र की महिमा को नये सिरे से पुनर्जीवित कर दिया है। भगवान् दयानन्द ने सकल संसार को एक ही परमात्मा की उपासना की ओर ले जाने का पुण्य प्रयास किया है। ऋषि दयानन्द ने वेदों को उनके

वास्तविक आसन पर आसीन कर दिया है तथा उनकी महानता व गौरव की धाक संसार के हृदयों पर बिठाने के लिये अपने प्राण तक भी वार दिये हैं। ऋषि दयानन्द ने भारत को दासता की बंधन कड़ियाँ तोड़कर दीनता-हीनता की दलदल से निकालने का प्रयास किया है।

मेरी दृष्टि में इस युग का सच्चा राजनीतिक नेता कहलाने का यदि कोई अधिकारी है तो वह भगवान् दयानन्द है कि जिसने अपने देश के समस्त रोगों का इलाज-निदान ईशोपासना तथा स्वराज्य बतलाया है। ऋषि दयानन्द ने अपने सर्व सामर्थ्य से भारत को उच्च बनाने के लिये सतत साधना की है। भगवान् दयानन्द के पश्चात् ईसाई लाख जोर लगा चुके, परन्तु उनकी दाल न गली। अत्यन्त दरिद्र चमार आदि दलित वर्गों को ईसा की भेड़ों में मिलाने में कुछ सफलता मिली है तो यह दूसरी बात है। शिक्षित वर्ग के अन्य हिन्दू सजग हो गये। ऋषि ने ढुलमुल निर्बल विश्वास के हिन्दुओं को सुझा दिया, समझा दिया कि वास्तविक शान्ति का सरोवर तो वेद हैं और संसार के अन्य-अन्य ग्रन्थ उन्हीं सच्चाइयों-सत्योपदेशों के 'ख़ोशाची' चुने हुये दाने हैं अत: प्रत्येक आर्य के लिये वेदों पर विश्वास करना उन्हें मानना तथा पढ़ना-पढ़ाना अनिवार्य घोषित किया। इसी प्रयोजन से ऋषि जी ने अपने समय में कई पुस्तकें लिखी हैं, परन्तु आपने जो **एक लघु पुस्तिका आर्याभिविनय लिखी है उसका तो कोई दूसरा उदाहरण ही नहीं मिलता।**

आर्यों की प्रार्थना-उपासना के लिये इसमें कुछ वेद-मन्त्र दिये गये हैं। साथ ही उनके अर्थ भी दिये गये हैं। ऋषि ने चुनकर कुछ ऐसे मन्त्र एक ही पुस्तक में संग्रहीत कर दिये हैं कि जिनके स्वाध्याय से निष्प्राण, मृत पड़े निर्जीव हृदयों में नवजीवन का सञ्चार हो जाता है। कायर भीरु सिंह बन जाते हैं। डरपोक नर नाहर वीर बन जाते हैं। परमेश्वर पर अटल विश्वास और सच्ची श्रद्धा यह प्रार्थना पुस्तक सिखाती है। इसकी शिक्षा हमें निर्भीक व निडर बनाती है। आर्यों के लिये यह पुस्तक जीवन-शक्ति है।

ऐसी पुस्तक का उर्दू अनुवाद करने में लाला गणेशदास जी[२] ने उर्दू जानने वाली जनता पर एक बहुत बड़ा उपकार किया है। आपने पुस्तक की महत्ता, ऋषि दयानन्द का बड़प्पन, उसके साथ अर्थ करने की शैली तथा वेदों पर किये गये आक्षेपों के उत्तर अत्यन्त योग्यता से प्रभावशाली भाषा में अपने प्राक्कथन में दिये हैं। मन्त्रों पर आपकी टिप्पणियाँ बहुत आवश्यक, पठनीय, सुबोध व उपयोगी हैं। इनमें सब उपयोगी बातों का उल्लेख हो गया है। लाला जी का स्वास्थ्य ठीक नहीं रहता। आप देश-सेवा में लगे रहते हैं। इसी अपराध में आप कारागार (स्वराज्य मन्दिर) की यात्रा भी कर आये हैं। आपके एक युवा पुत्र के निधन से आपको एक झटका लगा। कई प्रकार के दु:ख-कष्ट आपको झेलने पड़े हैं। इन विपरीत परिस्थितियों में भी विपदाओं के भँवर में बहते हुए स्वयं को सम्भाले रखना-यह इस बात का एक ज्वलन्त प्रमाण है कि आप कैसे उच्च पवित्र आत्मा हैं। आपका यह कथन यथार्थ है कि आपको यह स्फूर्ति व आत्मबल इस छोटी सी पुस्तक से प्राप्त हुआ है। घने दु:खों में इसने धीर बँधाया है। चिन्ताओं में इसने उत्साह प्रदान किया है। विपदाओं में इसने बहुत संवदेना व सहानुभूति प्रदान की है। संसार के घोर दु:खों का प्रतिकार करने व उन्हें रोकने की यह बहुत बड़ी ढाल है। ऋषि दयानन्द ने यह पुस्तक इसी उद्देश्य से तो लिखी थी। चिन्ताओं से घिरे गृहस्थों को वेद-वाणी के पाठ से शान्ति प्राप्त हो।

लाला गणेशदास ने बहुत अच्छा किया कि वह औषधि जो उनके लिये जीवन अमृत सिद्ध हुई उसे गुप्त रखने की बजाय जनता जनार्दन के सम्मुख रख दिया है। अपने निजी अनुभवों को इसमें सम्मिलित करके पुस्तक को और भी चित्ताकर्षक व उपयोगी बना दिया है। मैं यह स्वीकार करता हूँ कि संस्कृत तथा हिन्दी शब्दों में बन्द गम्भीर विचारों को उर्दू भाषा के शब्दों के वश से विभूषित करना कोई सरल कार्य नहीं है। अत: इस कारण मैं लाला गणेशदास जी के उत्साह की भूरि-भूरि प्रशंसा करता हूँ कि आपने एक ऐसे महत्त्वपूर्ण कार्य को अपने ऊपर लिया और प्रभु-कृपा से इस उत्तमता से कर दिखाया। आपके भाष्य के कारण पुस्तक का आकार बहुत बढ़ गया।[३] आर्याभिविनय का समझना सबके लिये कोई सरल कार्य नहीं है और फिर उर्दू भाषा में तो और भी कई उलझने हैं। इसलिये इसे बोधगम्य बनाने के लिये इसमें उल्लिखित

सच्चाइयों को जन-मन पर अंकित करने के लिये यह आवश्यक था कि लाला गणेशदास जी अपनी ओर से पर्याप्त जानकारी उपलब्ध करवायें।

मुझे पूर्ण विश्वास है कि यह पुस्तक लोकप्रिय होगी तथा जनता इसका स्वाध्याय करके अपने हृदय को शान्ति से मालामाल करेगी। गिरते हुये सम्भल जायेंगे। निर्बलता के समय इससे बल प्राप्त करेंगे। यह उन्हें जीवन प्रदान करेगी। यह उनके घावों को भरने वाली औषधि का कार्य करेगी। यह उन्हें बचायेगी। धर्म-मार्ग पर चलने की, आगे बढ़ने की शक्ति देगी। इसे पढ़कर दासता से घृणा पैदा होगी तथा स्वराज्य के लिये अदम्य उत्साह जगेगा।

कहा जाता है कि संसार में घनी काली घटाओं में प्रकाश की एक सूक्ष्म सी धारी होती है। यह कथन सत्य हो अथवा न हो लाला गणेशदास के सम्बन्ध में तो यह शब्दश: सत्य है। यदि विपदाओं के कारण लाला गणेशदास इतनी ऊँची व उपयोगी सेवा दे सके हैं, यदि कारागार में बन्दी रहकर वह एक मूल्यवान् रत्न जनता के सामने रखने में सफल हुये हैं तो मैं यह कहूँगा कि उन कष्टों-क्लेशों को आदर की दृष्टि से देखना चाहिये। यह वह अग्नि है जो स्वर्ण की खोट को जलाकर उसे शुद्ध व खरा सोना बना सकती है। ऐसी विपदाओं से घिर कर भागने की बजाय उनका आलिङ्गन करना, उनका स्वागत करना चाहिये, जो हमको वीर पुरुष बना जायें। हमारी निर्बलताओं को दूर करके हम को एक ऐसी दृढ़ शिला पर खड़ा कर दें जहाँ काल-कराल की दुर्घटनायें हमारा कुछ भी न बिगाड़ सकें। संसार की कोई भी शक्ति हमें देश व धर्मद्रोही न बना सके। जहाँ हमारा प्रभु-प्रेम कभी टल न सके तथा हम अपने परमेश्वर के चरणों में श्रद्धा-भक्ति से अपने धर्म का सदैव पालन करते रहें वहाँ ऋषिवर दयानन्द के पवित्र जीवन को अपने सामने आदर्श के रूप में रखकर उनके दिखाये हुये मार्ग पर चलें तथा वेद एवं ईश्वर के सच्चे अनुयायी व भक्त बनें।

मैं समझता हूँ कि यदि इस पुस्तक के पाठ से एक भी भटक रहे आत्मा को सुख-शान्ति प्राप्त हो सके तो लाला गणेशदास का जन्म सफल समझा जावेगा, क्योंकि किसी आत्मा को सम्भालकर श्रेष्ठ मार्ग पर लाना, उसके कष्टों को दूर करना प्रत्येक मनुष्य का कर्त्तव्य है। जीवित कहलाने का केवल उसी को ही अधिकार है जो अपने कर्त्तव्य-पालन में इस अवस्था में लगा है। लाला गणेशदास ने अत्यन्त परिश्रम व तप-त्याग से अपना कर्त्तव्य निभाया है, अब देखना है कि लोग कहाँ तक निज कर्त्तव्य का पालन करते हैं, इस शक्ति के सरोवर से कहाँ तक लाभान्वित होते हैं। मेरी यह हार्दिक कामना है कि इस पुस्तक का अत्यधिक प्रचार हो ताकि श्री स्वामी दयानन्द द्वारा चलाये गये मिशन को शीघ्र सफलता प्राप्त हो। आर्यावर्त दासता से मुक्त होकर, स्वतन्त्र होकर अखिल विश्व को ज्ञान से आलोकित करे और पूर्ववत् संसार को मनवा दे कि सब सत्य विद्याओं का आदि मूल वेद हैं। उनके सत्योपदेश पर चलने से ही जीवन का श्रेष्ठतम उद्देश्य प्राप्त हो सकता है और उनसे दूर होना, विमुख होना विनाश को प्राप्त होना तथा अपमान की मृत्यु मरना है।

टिप्पणी: १. इसका ज्वलन्त प्रमाण स्वामी विवेकानन्द तथा मैक्समूलर द्वारा एक-दूसरे की भूरि-भूरि प्रशंसा है। 'मैक्समूलर का एक्सरे' पुस्तक देखिये।

२. इन्हीं लाला गणेशदास की एक पुस्तक 'काग हंस परीक्षा' पढ़कर बालक गंगाप्रसाद पक्का आर्य तथा विश्वप्रसिद्ध वैदिक दार्शनिक बन गया। लाला गणेशदास का सन् १९४७ में बलिदान हो गया।

३. प्रथम भाग ही जो छपा उसकी पृष्ठ संख्या २६८ डिमाई साईज में है। - 'जिज्ञासु'

गुण कर्म स्वभावानुसार व्यवस्था से बस वर्णों में शुद्धता, योग्यता

जैसे पुरुष जिस-जिस वर्ण के योग्य होता है वैसे ही स्त्रियों की भी व्यवस्था समझनी चाहिए। इस प्रकार होने से सब वर्ण अपने-अपने गुण कर्म स्वभाव युक्त होकर शुद्धता के साथ रहते हैं अर्थात् ब्राह्मण कुल में कोई क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र सदृश न रहे और क्षत्रिय वैश्य तथा शूद्र वर्ण भी शूद्र रहते हैं। इससे किसी वर्ण की निन्दा व अयोग्यता भी न होगी।

(स. प्र. स. ४)

महर्षि पतञ्जलि द्वारा निर्दिष्ट योग की मानव-जीवन में उपयोगिता

डॉ. जगदेव विद्यालङ्कार

'योग' शब्द पिछले तीन-चार वर्षों में अत्यधिक प्रचलित हो गया है। २१ जून का दिन अन्तर्राष्ट्रीय योग-दिवस के नाम से विख्यात हो चुका है। विश्व के लगभग दो सौ देश २१ जून को योग-दिवस के रूप में मनाते हैं। स्वामी रामदेव का इसमें विशेष योगदान है। माननीय प्रधानमन्त्री श्री नरेन्द्र मोदी ने भी इसमें विशेष रुचि प्रदर्शित की है। योग का शाब्दिक अर्थ है जोड़ और मिलन। दो वस्तुओं का जोड़ अथवा मिलन योग कहलाता है। आध्यात्मिक क्षेत्र में आत्मा और परमात्मा के मिलन अथवा साक्षात्कार को योग कहा जा सकता है। इसीलिए विरक्त भाव से साधना करने वाले साधक को योगी कहा जाता है।

वर्तमान समय में अंग्रेजी के Yoga शब्द से प्रभावित होकर योग को योगा कहने की अशुद्ध परम्परा भी चलने लगी है। भाषाविज्ञान के नियमानुसार योग शब्द का अर्थ-संकोच होने लगा है। प्राणायाम और सामान्य शारीरिक आसनों का अभ्यास करने वाला व्यक्ति कहता है कि मैं योग करता हूँ। स्वामी रामदेव जी भी विज्ञापन देते हैं- **करो योग रहो नीरोग**। यद्यपि योग के इस प्रचलित और प्रचारित संकुचित अर्थ को ग्रहण करके उसका निर्वाह करने से मनुष्य को शारीरिक दृष्टि से पर्याप्त लाभ तो होता है, परन्तु महर्षि पतञ्जलि द्वारा प्रणीत योगदर्शन में योग शब्द का जो महत्त्वपूर्ण और व्यापक अर्थ है, उससे तो व्यक्ति परिचित नहीं हो पाता।

योग की परिभाषा प्रस्तुत करते हुए महर्षि पतञ्जलि योगदर्शन में लिखते हैं- **योगश्चित्तवृत्तिनिरोधः** अर्थात् चित्त की वृत्तियों को रोकना ही योग कहलाता है। आभ्यन्तर इन्द्रिय अर्थात् बुद्धि की उस स्थिरता को योग कहते हैं जिसमें वह चेष्टा नहीं करती, उस अवस्था में परमात्मा के स्वरूप में स्थिति होती है, इसलिए अगले सूत्र में कहा- **तदा द्रष्टुः स्वरूपे अवस्थानम्** जब सर्व वृत्तियों का निरोध होकर चित्त अपने कारण प्रकृति में लीन हो जाता है, तब इस जीवात्मा का प्रकृति तथा प्राकृतिक पदार्थों के साथ सम्बन्ध नहीं रहता, उस अवस्था में वह अपने चेतन स्वरूप से परमात्मा के आनन्द को भोगता हुआ उसी में स्थिर होता है। इसी बात को सांख्यदर्शन के रचयिता महर्षि कपिल इस प्रकार कहते हैं- **समाधिसुषुप्तिमोक्षेषु ब्रह्मरूपता** अर्थात् समाधि, सुषुप्ति और मोक्ष में पुरुष की ब्रह्म के समान रूपता अर्थात् उसके स्वरूप में स्थिति होती है। यही जीव का अन्तिम और चरम लक्ष्य है, इसी को मोक्ष कहते हैं। महर्षि गौतम भी न्यायदर्शन में अपवर्ग अर्थात् मोक्ष-प्राप्ति का उपाय बताते हैं-

दुःखजन्मप्रवृत्तिदोषमिथ्याज्ञानानामुत्तरोत्तरापाये
तदनन्तरापायादपवर्गः

अर्थात् तत्त्वज्ञान से मिथ्या ज्ञान का नाश हो जाता है और मिथ्याज्ञान के नाश से रागद्वेषादि दोषों का नाश हो जाता है, दोषों के नाश से प्रवृत्ति (सकाम कर्म) का नाश हो जाता है प्रवृत्ति के नाश से कर्म बन्द हो जाते हैं, कर्म के न होने से प्रारब्ध का बनना बन्द हो जाता है। प्रारब्ध के न होने से जन्म नहीं होता और जन्म न होने से दुःख नहीं होता अर्थात् मोक्ष हो जाता है।

मानव की आध्यात्मिक उन्नति तो पूर्ण रूप से योगसाधना पर आधारित है ही, भौतिक उन्नति में भी योगसाधना की आवश्यकता है, भौतिक जीवन में भी योगाभ्यास से शान्ति मिलती है। योग के द्वारा मनुष्य भौतिकता और आध्यात्मिकता में सामञ्जस्य स्थापित कर सकता है।

महर्षि पतञ्जलि ने जहाँ चित्त की वृत्तियों को रोकना योग बतलाया, वहाँ चित्त की वृत्तियों को रोकने का उपाय भी बताया है, वह कहते हैं-

अभ्यासवैराग्याभ्यां तन्निरोधः

अर्थात् अभ्यास और वैराग्य से उन वृत्तियों का निरोध होता है। इनमें वैराग्य चित्तवृत्ति के निरोध का और अभ्यास निरोध की स्थिरता का उपाय है। उसी बात को गीता में भी कहा गया है-

अभ्यासेन तु कौन्तेय वैराग्येण गृह्यते।

अर्थात् हे अर्जुन! चञ्चल मन निरन्तर अभ्यास तथा

बुराई के प्रति वैराग्य से वश में होता है।

महर्षि पतञ्जलि ने योग में सफलता प्राप्त करने के लिए योग के आठ अंगों का विधान किया है, जो निम्नलिखित प्रकार से है- यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान और समाधि। **यम** पाँच प्रकार के होते हैं-

१. अहिंसा- मन, वाणी और शरीर से कभी भी किसी को भी दु:ख न देने का नाम अहिंसा है।

२. सत्य- यथार्थभाषण अर्थात् जैसा देखा व अनुमान किया अथवा सुना उसको वैसा ही कथन करने का नाम सत्य है।

३. अस्तेय- चोरी न करना अर्थात् छल, कपट, ताडनादि किसी प्रकार से भी अन्य पुरुष के धन को ग्रहण न करने का नाम अस्तेय है।

४. ब्रह्मचर्य- सर्व इन्द्रियों के निरोधपूर्वक उपस्थ इन्द्रिय के निरोध का नाम ब्रह्मचर्य है।

५. अपरिग्रह- दोष दृष्टि से विषयों के परित्याग का नाम अपिरग्रह है। नियम भी पाँच प्रकार के होते हैं-

१. शौच- यह दो प्रकार का है-

(क) बाह्य शौच- जल अथवा मिट्टी आदि से शरीर के और हित, मित तथा मेध्य अर्थात् पवित्र भोजन आदि से उदर के प्रक्षालन का नाम बाह्य-शौच है।

(ख) आभ्यन्तर शौच- मैत्री, करुणा, मुदिता, उपेक्षा आदि भावनाओं से ईर्ष्या-द्वेष आदि चित्त के मलों के प्रक्षालन का नाम आभ्यन्तर शौच है।

२. सन्तोष- जो भोग के उपयोगी साधन अपने पास विद्यमान हैं उनसे अधिक उपयोगी साधनों की लालसा न करना सन्तोष है।

३. स्वाध्याय- ओंकारादि ईश्वर के पवित्र नामों का जप और वेद, उपनिषद्, वेदांग, उपांग आदि शास्त्रों के अध्ययन का नाम स्वाध्याय है।

४. ईश्वर-प्रणिधान- फल की इच्छा छोड़कर केवल ईश्वर की प्रसन्नता व वेद-विहित कर्मों के करने को ईश्वर-प्रणिधान कहते हैं।

यम-नियमों के स्वरूप-कथन के अतिरिक्त महर्षि पतञ्जलि उनकी सिद्धि का लक्षण-निरूपण भी करते हैं-

१- अहिंसा की सिद्धि- अहिंसा प्रतिष्ठायां तत्सन्निधौ वैरत्याग: अहिंसा के सिद्ध होने पर उस योगी के समीपवर्ती विरोधी जीवों का भी विरोध निवृत्त हो जाता है। जिस योगी का अहिंसा यम सिद्ध हो गया है उसके समीप रहने वाले जीव भी विरोध का परित्याग कर देते हैं और मित्रभाव को प्राप्त हो जाते हैं।

२- सत्य की सिद्धि- सत्य प्रतिष्ठायां क्रियाफलाश्रयत्वम् अर्थात् सत्य के सिद्ध होने पर योगी की वाणी क्रिया तथा फल का आश्रय हो जाती है। धर्म का नाम क्रिया और सुख का नाम फल है, जिस योगी को सत्य सिद्ध हो जाता है यदि वह अधार्मिक पुरुष को भी अपनी वाणी से-तू धार्मिक हो जा, ऐसा कह दे तो वह धार्मिक हो जाता है। अर्थात् जब योगी की वाणी व्यर्थ न जाए और जैसा कहे वैसा हो जाए तब उसका सत्य सिद्ध हुआ जानना चाहिए। राम के विषय में एक उक्ति प्रसिद्ध है- **रामो द्विर्न भाषते** अर्थात् राम को दोबारा नहीं बोलना पड़ता था।

३- अस्तेय की सिद्धि- अस्तेय प्रतिष्ठायां सर्वरत्नोपस्थानम् अस्तेय के सिद्ध हो जाने पर चारों दिशाओं में होने वाले रत्न आदि सम्पूर्ण पदार्थ स्वयमेव प्राप्त हो जाते हैं। भाव यह है कि अस्तेय की सिद्धि होने से योगी विश्वास के योग्य हो जाता है और विश्वास के योग्य होने के कारण उसको संकल्प मात्र से सम्पूर्ण पदार्थों की प्राप्ति हो जाती है। यही अस्तेय की सिद्धि का चिह्न है।

४- ब्रह्मचर्य की सिद्धि- ब्रह्मचर्यप्रतिष्ठायां वीर्यलाभ: अर्थात् ब्रह्मचर्य सिद्ध होने पर तेज और बल की प्राप्ति होती है। जिस योगी का ब्रह्मचर्य प्रतिष्ठित हो गया है उसको अत्यधिक सामर्थ्य प्राप्त हो जाता है जिससे वह अपनी आत्मा और समाज का पर्याप्त उपकार कर सकता है। अथर्ववेद में ब्रह्मचर्य की महिमा का वर्णन करते हुये लिखा है-

ब्रह्मचर्येण तपसा राजा राष्ट्रं विरक्षति।
आचार्यो ब्रह्मचर्येण ब्रह्मचारिणमिच्छते।।

११.३.१७

अर्थात् ब्रह्मचर्य रूप तप के द्वारा राजा अपने राज्य की रक्षा कर सकता है और आचार्य भी ब्रह्मचर्य की शक्ति

से वेद-शास्त्रों के अध्यापन में पारंगत हो जाता है। अतः सभी मनुष्यों को ब्रह्मचर्य का पालन करने का अभ्यास करना चाहिए।

५- अपरिग्रह की सिद्धि- अपरिग्रहस्थैर्ये जन्मकथंतासंबोधः अर्थात् अपरिग्रह सिद्ध होने पर जन्म के कथंभाव का ज्ञान होता है। मनुष्य जन्म किस प्रकार सफल हो सकता है, इस प्रकार के ज्ञान का नाम **जन्मकथंतासंबोध** है और यही अपरिग्रह की सिद्धि है। अनावश्यक अर्थ-संचय की प्रवृत्ति का न होना अपरिग्रह है।

नियमों की सिद्धि

१. (क) बाह्य शौच की सिद्धि- शौचात्स्वांगजुगुप्सा परैरसंसर्गः बाह्य शौच की सिद्धि होने पर अपने शरीर में ग्लानि तथा दूसरों के साथ असंबन्ध होता है। जब साधक को बाह्य शौच सिद्ध होता है, तब इसको अपने शरीर में अशुचिताबुद्धि उत्पन्न होती है। अर्थात् यह शरीर हाड़-मांस-खून का बना है, इसके अन्दर भी मल भरा हुआ है, नासिकादि सभी छिद्रों से मल बहता है, मृत्यु के बाद उसको कोई छूना नहीं चाहता अतः यह शरीर अपवित्र है, ऐसी बुद्धि से ग्लानि और ग्लानि से देहाध्यास की निवृत्ति होती है और अन्यों से संबन्ध की इच्छा भी नहीं रहती, अतः योगी एकान्तवासी होकर आत्मध्यान में संलग्न हो जाता है।

(ख) आभ्यन्तर शौच की सिद्धि- सत्त्वशुद्धि सौमनस्येकाग्र्येन्द्रियजयात्मदर्शनयोग्यत्वानि च। आभ्यन्तर शौच सिद्ध हो जाने से सत्त्वबुद्धि, सौमनस्य, एकाग्रता, इन्द्रियजय और आत्मदर्शन योग्यता की प्राप्ति होती है अर्थात् चित्त की शुद्धि, स्वच्छता, एकाग्रता, इन्द्रियों पर विजय और आत्मा के ज्ञान की योग्यता प्राप्त हो जाती है यही आभ्यन्तर शौच की सिद्धि का चिह्न है।

२. सन्तोष की सिद्धि- सन्तोषादनुत्तमसुखलाभः सन्तोष की सिद्धि होने पर योगी को उत्कृष्ट सुख की प्राप्ति होती है। तृष्णा दुःखों का मूल कारण है, भर्तृहरि ने भी कहा-

'स तु भवति दरिद्रो यस्य तृष्णा विशाला'

अर्थात् दरिद्र या दुःखी वह होता है जिसमें तृष्णाएँ अधिक हैं। कबीर ने बहुत सुन्दर कहा-

'गोधन गजधन वाजिधन और रतनधन खान।
जब आवे सन्तोष धन सब धन धूरि समान।।'

अतः सुख सन्तोष में है और यही सन्तोष की सिद्धि का चिह्न है।

३. तप की सिद्धि- तप की सिद्धि से अशुद्धि के क्षय से योगी के शरीर तथा इन्द्रिय सिद्धि की प्राप्ति होती है। शरीर के सर्वथा स्वस्थ हो जाने का नाम कायसिद्धि है और इन्द्रियों के सभी विषयों के यथार्थ ग्रहण करने की शक्ति का नाम इन्द्रिय-सिद्धि है अर्थात् इन्द्रियों का बहिर्मुखी न रहकर अन्तर्मुखी हो जाना। इन दोनों शक्तियों का प्राप्त होना ही तप की सिद्धि है।

४. स्वाध्याय की सिद्धि- 'स्वाध्यायादिष्टदेवतासंप्रयोगः।' स्वाध्याय के सिद्ध होने से इष्टदेव परमात्मा का साक्षात्कार होता है। श्रद्धापूर्वक स्वाध्याय के अनुष्ठान से अनेक बार स्वाध्यायी के मस्तिष्क में आकस्मिक रूप से अभिलषित अर्थ प्रकट हो जाते हैं। परमात्मा में मन का स्थित होना स्वाध्यायसिद्धि का लक्षण है।

५. ईश्वरप्रणिधान की सिद्धि- 'समाधिसिद्धिरीश्वरप्रणिधानात्' ईश्वरप्रणिधान सिद्ध होने से समाधि की प्राप्ति में सहायता मिलती है। अपने आपको और अपने द्वारा किए जाने वाले कार्यों को सर्वात्मना ईश्वर के लिए अर्पण कर देना ईश्वर प्रणिधान का तात्पर्य है, इससे समाधि के अनुकूल मन की स्थिति बन जाती है।

३. आसन- स्थिरसुखमासनम् स्थिर तथा सुखदायी का नाम आसन है। योगी सिद्धासन, पद्मासन, वीरासन, भद्रासन, स्वस्तिकासन आदि जिस आसन में सुख से बैठ कर ईश्वर का ध्यान लगा सके वही आसन उचित है। आसन के सिद्ध हो जाने पर योगी को सर्दी-गर्मी आदि द्वन्द्व नहीं सताते।

४. प्राणायाम- महर्षि मनु ने अपनी मनुस्मृति में प्राणायाम की महिमा का वर्णन करते हुए लिखा है-

'दह्यन्ते ध्मायमानानां धातूनां हि यथा मलाः।
तथेन्द्रियाणां दह्यन्ते दोषाः प्राणस्य निग्रहात्।।'

६.७१

अर्थात् जैसे अग्नि में तपाने और गलाने से धातुओं के मल नष्ट हो जाते हैं वैसे ही प्राणों के निग्रह से मन आदि इन्द्रियों के दोष भस्मीभूत हो जाते हैं। पतञ्जलि मुनि ने प्राणायाम का लक्षण बताते हुए लिखा है 'तस्मिन् सति श्वासप्रश्वासयोर्गतिविच्छेद: प्राणायाम:' अर्थात् आसन की सिद्धि होने पर श्वास-प्रश्वास की गति के अभाव का नाम प्राणायाम है। उन्होंने प्राणायाम के चार प्रकार बतलाये।

१. बाह्यवृत्ति- जिस प्राणायाम में प्रश्वासपूर्वक प्राणगति का अभाव होता है उसका नाम बाह्यवृत्ति है, इसे रेचक भी कहते हैं, क्योंकि इसमें प्राणवायु को बाहर ही रोका जाता है।

२. आभ्यन्तरवृत्ति- जिस प्राणायाम में श्वासपूर्वक प्राणगति का अभाव होता है उसका नाम आभ्यन्तरवृत्ति है, इसे पूरक भी कहते हैं, क्योंकि इसमें प्राणवायु को भीतर ही रोका जाता है।

३. स्तम्भवृत्ति- जिस प्राणायाम में श्वासप्रश्वासपूर्वक प्राणगति का अभाव होता है उसका नाम स्तम्भवृत्ति है, उसे कुम्भक भी कहते हैं, क्योंकि इसमें कुम्भस्थ जल की भाँति देह के भीतर निश्चलतापूर्वक प्राण की स्थिति होती है। इसमें जहाँ का तहाँ प्राण को रोका जाता है।

४. बाह्याभ्यन्तर विषयाक्षेपी- इसमें प्राण की स्वाभाविक गति को विपरीत दिशा में बलपूर्वक धकेला जाता है। अर्थात् यदि प्राण बाहर आ रहा है तो भीतर की ओर तथा भीतर जा रहा है तो बाहर की ओर धकेला जाता है।

प्राणायाम के लाभ

१-प्राणायाम से आयु की वृद्धि होती है।

२-प्राणायाम से शारीरिक और मानसिक उन्नति होती है।

३- प्राणायाम से रोग दूर होते हैं।

४- प्राणायाम से कुत्सित मनोवृत्तियाँ नष्ट हो जाती हैं।

५- प्राणायाम से चित्त का मल दूर होकर ज्ञान बढ़ता है।

६- प्राणायाम से प्राण वश में होने से इन्द्रियाँ और मन भी वश में हो जाता है।

७- प्राणायाम से धातुओं की पुष्टि होती है।

८- प्राणायाम से हृदय पर पड़े तम के आवरण का नाश होता है।

५. प्रत्याहार- स्वविषयासंप्रयोगे चित्तस्वरूपानुकार इवेन्द्रियाणां प्रत्याहार:। अर्थात् अपने-अपने विषयों के साथ सम्बन्ध न होने के कारण इन्द्रियों की चित्तस्थिति के समान स्थिति का नाम प्रत्याहार है। इन्द्रियों का बाह्य विषयों में जाना सहज स्वभाव है, उस सहज स्वभाव के विपरीत अन्तर्मुख होने को प्रत्याहार कहते हैं।

६. धारणा- 'देशबन्धश्चित्तस्य धारणा।' अर्थात् चित का देश विशेष (शरीर के नासिकाग्र, जिह्वाग्र, हृदय आदि अंगविशेष) में स्थिर करना धारणा कहलाती है।

७. ध्यान- 'तत्र प्रत्ययैकतानता ध्यानम्।' अर्थात् धारणा के अनन्तर ध्येय पदार्थ में होने वाली चित्तवृत्ति की एकतानता को ध्यान कहते हैं।

८. समाधि- तदेवार्थमात्रनिर्भासं स्वरूपशून्यमिव समाधि:। अर्थात् अपने ध्यानात्मक रूप से रहित केवल ध्येय रूप से प्रतीत होने वाले उक्त ध्यान का ही नाम समाधि है। चित्त की जिस एकाग्र अवस्था में ध्याता, ध्यान, ध्येय रूप त्रिपुटि का भान होता है उसको ध्यान और केवल ध्येय के भान को समाधि कहते हैं।

उपर्युक्त अष्टांगयोग से योगियों की तो उन्नति होती है, सांसारिक मनुष्यों को भी इससे जीवन में बहुत लाभ होता है।

पूर्व प्राचार्य, राजकीय महाविद्यालय,
रोहतक हरियाणा।

अधर्मात्मा का विनाश अवश्यभावी

जब अधर्मात्मा मनुष्य धर्म की मर्यादा छोड़, कपट, पाखण्ड, विश्वासघात आदि कर्मों से पराये पदार्थों को लेकर प्रथम बढ़ता है, पश्चात् धनादि ऐश्वर्य से प्रतिष्ठा को प्राप्त होता है, अन्याय से शत्रुओं को भी जीतता है पश्चात् शीघ्र समूल नष्ट हो जाता है।

(स. प्र. स. ४)

शङ्का समाधान - ५३

डॉ. वेदपाल

शङ्का- वेद के अनुसार परमात्मा साकार है या निराकार?

पवन कुमार पारीक, सरदारशहर (राजस्थान)

समाधान- जगत् में दो सत्ताएँ हैं- १. जड़ २. चेतन। दृश्यमान स्थूल जगत् अपने उपादान कारण सहित जड़ है। चेतन सत्ता भी दो हैं। प्रथम इस स्थूल व्यष्टि शरीर के माध्यम से व्यक्त होती है अथवा अनुभव की जाती है। इसे जीव/आत्मा/जीवात्मा नाम से सम्बोधित किया जाता है। दूसरी सत्ता समष्टि शरीर (जिस प्रकार हमारे अस्मदादि के शरीर व्यष्टि शरीर हैं, उसी प्रकार सम्पूर्ण जगत् उस ईश्वर-ब्रह्म-परमात्मा का समष्टि शरीर कहा जा सकता है) सम्पूर्ण चराचर जगत् की प्रवृत्ति-धृति और निवृत्ति की नियामक है।

प्रथम चेतन सत्ता (आत्मा-जीव) इस स्थूल जगत् के सूक्ष्मतम अंश से भी सूक्ष्म है। दूसरी चेतन सत्ता जिसे परमात्मा-ईश्वर-ब्रह्म कहते हैं, वह प्रथम चेतन सत्ता जीव से भी सूक्ष्म है। इसे ऋग्वेद के **''अव: परेण पर एनावरेण''** ऋ. १.१६४.१७-१८ शब्दों द्वारा व्यक्त किया गया है।

आकार का अभिप्राय है-ऐसा सावयव पदार्थ/वस्तु जो बाह्येन्द्रियवृत्ति अर्थात् बहिरिन्द्रिय का विषय होकर इन्द्रियार्थ के सन्निकर्ष से उस वस्तु की आकृति-यह इस-इस प्रकार की है अथवा उसका एक सीमित स्थान में सीमित रूप में बोध का विषय होना, जिसे किन्हीं सीमाओं में बाँधा जा सके। आकार से युक्त वस्तु-पदार्थ को साकार तथा आकार से रहित पदार्थ को निराकार कहते हैं।

साकार पदार्थ निश्चय ही एकदेशी होता है। इसका कोई अपवाद नहीं है। वह चेतन सत्ता जो समग्र जगत् का युक्ति-युक्त सृजन कर विशेष व्यवस्था के अन्तर्गत नियमन एवं धारण करती है, उसका एकदेशी होना सम्भव नहीं है। अर्थात् एकदेशी द्वारा समग्र जगत् का नियमन असम्भव है, क्योंकि उसका सामर्थ्य और ज्ञान भी सीमित ही होगा। ऐसा पदार्थ-सत्ता सर्वव्यापक भी नहीं होगा। उस सर्वव्यापक का एकाधिक होना भी सम्भव नहीं है। वेद में उस सर्वव्यापक सत्ता के निराकार-आकार से रहित होने का वर्णन अनेक मन्त्रों में उपलब्ध है। तद्यथा-

क- न तस्य प्रतिमा अस्ति

- यजु. ३२.३

उस महान् यशयुक्त परमात्मा की कोई प्रतिमा= प्रतिमान-आकार/आकृति नहीं है।

ख- ...अपादशीर्षा...

ऋ. ४.१.११

वह ईश्वर पाँव शिर आदि अवयवों से रहित है।

ग- नैनमूर्ध्वं न तिर्यञ्चं न मध्ये परिजग्रभत्

- यजु. ३२.२

परमात्मा को न तो ऊपर से, न तिरछा (दाएँ-बाएँ-आगे-पीछे आदि किसी दिशा से) और न ही मध्य से कोई ग्रहण कर सकता है।

घ- स पर्यगाच्छुक्रमकायमव्रणमस्नाविरम्...

यजु. ४०

वह सर्वव्यापक है। शुद्ध, अकाय-शरीर रहित, अव्रण और नस-नाड़ी के बन्धन से रहित है।

परमात्मा अपने अनन्त स्वसामर्थ्य से सृष्टि-उत्पत्ति, स्थिति और प्रलय आदि कर्म करता है, जिन्हें साकार एकदेशी द्वारा करना असम्भव है। सर्वव्यापकत्त्व, सर्वशक्तिमत्त्व आदि गुण भी निराकार में ही सम्भव हैं। वेद में परमात्मा का निराकार रूप में ही वर्णन हुआ है।

मेरठ

मनुष्यों को चाहिये कि अपने पुरुषार्थ से सुवर्ण आदि धन को इकट्ठा कर घोड़े आदि उत्तम पशुओं को रक्खें क्योंकि जब तक इस सामग्री को नहीं रखते तब तक गृहाश्रमरूपी यज्ञ परिपूर्ण नहीं कर सकते इसलिये सदा पुरुषार्थ से गृहाश्रम की उन्नति करते रहें।

- महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद, भावार्थ ८.६३

भारतीय परम्परा में राजा के गुण

रामनिवास 'गुणग्राहक'

सबसे पहले सुधी पाठक यह जान लें कि भारतीय धर्म, दर्शन और संस्कृति की परम्परा लगभग एक अरब छियानवे करोड़ वर्ष से भी अधिक प्राचीन है। जो लोग भारत की सांस्कृतिक परम्परा को पाँच-छः हजार वर्ष की मानते हैं, वे अंग्रेजों की काल्पनिक अवधारणा का अन्धानुकरण करते हैं। जब पचास लाख वर्ष पुराना जूते का सिला हुआ तला मिला है, तब मानवता के इतिहास को हजारों वर्षों में समेटना हास्यास्पद ही लगता है। अस्तु।।

जब हम भारतीय परम्परा की बात करते हैं तो निश्चित रूप से हमें भारतीय धर्म-दर्शन की परम्परा के मूलस्रोत वेदों तक पहुँचना पड़ेगा। वेद परमात्मा द्वारा मानव मात्र के लिए दिया गया सृष्टि का वह अटल संविधान है, जिसमें मानव के काम आने वाली सभी विद्याएँ सूत्र रूप में विद्यमान हैं। महर्षि मनु की घोषणा है-''**वेदेषु सर्वाः विद्याः सन्ति मूलोद्देश्यतः।**'' वेदों में बीज रूप में सभी विद्याएँ हैं। राजधर्म या राजनीति की बात करें तो राजनीति के सभी अंगों का विस्तृत वर्णन वेदों में मिलता है। हम यहाँ केवल राजा-शासक के गुणों के बारे में वेद क्या कहते हैं, यह जानने-समझने का प्रयास करेंगे। शेष समग्र साहित्य-परम्परा में वेदों का अनुकरण या विस्तार ही देखने को मिलता है। वेद से हटकर जो कुछ कहीं मिलता है, वह भारतीय परम्परा का अंग स्वीकार नहीं किया जाता।

राजा शब्द पढ़ते-सुनते ही हमें लगता है कि राजा तो पैतृक विरासत से ही बनता होगा। जैसे दशरथ के बाद श्रीराम, पाण्डु के बाद युधिष्ठिर। हम नहीं जानते कि यजुर्वेद के पाँचवें अध्याय के चौबीसवें मन्त्र में चार प्रकार की राज-व्यवस्था के संकेत हैं। स्वराट्, सत्रराट्र जनराट् और सर्वराट्। वेदों में राजा के चुनाव का भी स्पष्ट संकेत है। ऋग्वेद ७.८२.२ में कहा है-''हे अध्यापक-उपदेशको! तुम सभी विद्वानों के सहयोग व स्व तेज (विद्या-विवेक) से एक को सम्राट् और दूसरे को स्वराट् बनाओ।'' यजुर्वेद-९.३० में कहा है-''मनुष्यों को योग्य है कि ईश्वर में प्रेमी, बल-पराक्रम व पुष्टि से युक्त, चतुर, जितेन्द्रिय, धर्मात्मा, प्रजा-पालन में समर्थ विद्वान् को अच्छे प्रकार परीक्षा करके सभा का स्वामी करने के लिए अभिषेक करके राजधर्म की उन्नति अच्छे प्रकार नित्य (सदा) किया करें।'' इन दो उद्धरणों से स्पष्ट है कि राजा का चुनाव विद्वानों के सहयोग से सदा प्रजा ही करती है। प्रजा को जब राजा चुनना हो तो जाति-गोत्र, वर्ग-समप्रदाय देखकर नहीं, गुण देखकर करना चाहिए। मन्त्र में गुणों का भी स्पष्ट निर्देश है-वह ईश्वर से प्रेम (भक्ति) करता हो, बलवान, पराक्रमी और उत्तम स्वास्थ्य का धनी हो, कार्य-कुशल हो, जितेन्द्रिय-संयमी हो, धर्मात्मा हो तथा प्रजा-पालन में समर्थ हो।

यजुर्वेद ९.२१ में तो स्पष्ट शब्दों में बहुत ही ऊँची शिक्षा दी है-''मैं ईश्वर सब मनुष्यों को आज्ञा देता हूँ कि तुम लोग मेरे तुल्य गुण, कर्म, स्वभाव वाले पुरुष (राजा) की ही प्रजा होओ, अन्य किसी मूर्ख क्षुद्राशय (छोटी सोच वाले) पुरुष की प्रजा होना स्वीकार कभी मत करो।'' इस मन्त्र में ऐसे राजा की प्रजा होने का आदेश है जो ईश्वर के समान निष्पक्ष न्याय करने वाला हो, सबका भरण-पोषण और रक्षण करने वाला हो। वेदों में प्रजा की रक्षा को राजा का मुख्य कर्त्तव्य माना है। 'ये जो राजपुरुष हम लोगों से कर (टैक्स) लेते हैं, वे हमारी निरन्तर रक्षा करें, नहीं तो (कर) न लें, हम भी उनको कर न देवें। प्रजा की रक्षा और दुष्टों के साथ युद्ध करने के लिए ही कर देना चाहिए, अन्य किसी प्रयोजन के लिए नहीं, यह निश्चित है।' (यजु. ९.१७)

ऐसे ही मन्त्र ऋग्वेद में भी भरे पड़े हैं-''जो प्रजाजनों से कर लिया जाता है, उसका बदला देना उन प्रजाओं की रक्षा करना ही समझना चाहिए'' (ऋ. १.११६.१५)। ''यदि राजा प्रजा-रक्षक न हो तो किसी को सुख न हो'' (७.३२.१०)। ''हे राजन्! आप हमारी रक्षा करते हो तो हम आपकी रक्षा करेंगे'' (७.२४.४)। इसीलिए कहा है-''वही राजा निरन्तर बढ़ता है जो अपराधी मित्रों को भी दण्ड दिये बिना नहीं छोड़ता'' (ऋ. ७.२७.२)। ऋग्वेद में राज्य की उन्नति के दो अनमोल सूत्र बताये हैं- ''जब तक

सैन्य शक्ति में बिखराव नहीं आता या मन अन्याय में नहीं जाता, तब तक उन्नति होती है'' (७.२५.२)। राजनीति के पुरोधा यह गाँठ बाँध लें कि दो ही कारणों से राज्य का सर्वनाश हो जाता है, पहला-सेना का असंगठित होकर निर्बल हो जाना, दूसरा- राजा व मन्त्री आदि राजपुरुषों के मन में अन्याय भाव का आना।

वेदों में राजनीति के विविध विषयों के सटीक मार्गदर्शक तत्त्व जहाँ-तहाँ बिखरे पड़े हैं। यह हम देख ही चुके हैं कि वेदों में राजा का मुख्य कर्त्तव्य प्रजा की रक्षा करना ही माना है। विचार कर देखा जाए तो सुख, शान्ति और समृद्धि आदि सब सुरक्षा के बिना मूल्यहीन होकर रह जाते हैं। महाभारत में आता है-

''स्वतश्च परतश्चैव, परस्परं भयादपि।
अमानुषभयेभ्यश्च स्वाः प्रजाः पालयेन्नृपः।।''

अर्थात् अपने भय से, किसी दूसरे राजा के भय से, प्रजा पुरुषों के परस्पर के भय से, हिंसक पशुओं या आतंक जैसी अमानवीय घटनाओं के भय से सर्वथा मुक्त रखकर ही राजा अपनी प्रजा का पालन करे।

आर्यसमाज, श्रीगंगानगर।

गुरुकुल के लिये प्रवेश-सूचना

परोपकारिणी सभा, अजमेर द्वारा संचालित महर्षि दयानन्द आर्ष गुरुकुल, ऋषि उद्यान-अजमेर में वैदिक धर्म एवं आर्यसमाज के उपदेशक तैयार करने हेतु उपदेशक कक्षा में प्रवेश प्रारम्भ हैं।

प्रवेशार्थी की न्यूनतम आयु १४ वर्ष तथा कक्षा आठ या उससे अधिक उत्तीर्ण हो। आर्ष-पद्धति से व्याकरण, दर्शन तथा महर्षि निर्दिष्ट पाठ्यक्रम के अध्यापन की व्यवस्था है।

गुरुकुल में अध्यापन, भोजन एवं आवास की नि:शुल्क व्यवस्था है।

प्रवेश के इच्छुक अभ्यर्थी सम्पर्क करें-
आचार्य, आर्ष गुरुकुल, ऋषि उद्यान, पुष्कर रोड, अजमेर।
दूरभाष- ९८७९५८७७५६

ऋषि मेला २०१९ हेतु स्टॉल आवंटन

प्रति वर्ष की भांति इस वर्ष ऋषि मेला १, २, ३ नवम्बर शुक्र, शनि, रविवार २०१९ को ऋषि उद्यान में आयोजित होगा। उसमें आर्य जगत् का साहित्य, हवन सामग्री, अन्यान्य सामग्री की स्टॉल लगती हैं। प्रति स्टॉल किराया १००० रु. निर्धारित है। जिसकी राशि पहले जमा होगी उसी क्रम से स्टॉल का आवंटन होगा। जिन महानुभावों को जितनी स्टॉल की आवश्यकता है, उसी अनुरूप राशि बैंक ड्राफ्ट द्वारा या नकद जमा करावें।

स्टॉल सुविधाः- कारपेट, दो टेबल, दो कुर्सी, २ ट्यूब लाइट प्रति स्टॉल। **स्टॉल साइज-** ७.५×१५ फीट।

ध्यातव्य- १. स्टॉल में रखी टेबल, कुर्सी आदि पूर्व निर्धारित सामग्री को इधर-उधर या अन्य स्टॉल में न बदलें। **२.** अतिरिक्त सामग्री की आवश्यकता हो तो टैन्ट हाउस के कर्मचारी से सम्पर्क कर प्राप्त करें तथा निर्धारित राशि तुरन्त भुगतान करें। **३.** बिस्तर, रजाई, चादर, तकिया को टेन्ट हाउस कर्मचारी से प्राप्त कर निर्धारित राशि जमा करा दें। **४.** स्टॉल व्यवस्थापक से स्टॉल संख्या, राशि की रसीद दिखाकर प्राप्त करें। बिना पूर्व अनुमति के स्टॉल में सामान न रखें, न अधिकृत करें। **५.** आपके सक्रिय सहयोग व अनुशासन की अपेक्षा है। अनियमितता को स्थान न देवें। ६. अपना मोबाइल (चलभाष) नवम्बर देना अति आवश्यक है।७. आप अपना स्थाई पता अवश्य देवें। ८. स्टॉल में आप पुस्तकें/दवाइयाँ/अन्य सामग्री का उल्लेख अवश्य करें। ९. स्टॉल आवंटन हेतु अग्रिम राशि जमा करावें, अन्यथा विचार सम्भव नहीं होगा। १०. एक पासपोर्ट फोटो भिजवावें, जो परिचय पत्र के साथ अंकित हो। उसमें स्टॉल आवंटन संख्या भी अंकित किया जाएगा। ११. स्टॉल आवंटन की सूचना निर्धारित अवधि में दी जायेगी। **नोटः-** किसी प्रकार का अवैदिक साहित्य एवं सामग्री न हो अन्यथा उचित कार्यवाही सम्भव होगी।

अविनाशी स्तुति का स्वरूप

प्रो. ज्ञानप्रकाश शास्त्री

ऋचो अक्षरे परमे व्योमन् यस्मिन् देवा अधि विश्वे निषेदुः।
यस्तन्न वेद किमृचा करिष्यति यस्तद् विदुस्त इमे समासते।।

ऋक् अर्थात् स्तुति के अक्षर परम व्योम में स्थित हैं। परम व्योम के स्वरूप को स्पष्ट करता हुआ मन्त्र कहता है कि यह वह स्थान है जहाँ पर समस्त देवता कारण रूप में विद्यमान रहते हैं। दिव्य शक्तियाँ जिस परमात्मा में रहती हैं, जो उस परमात्मा को नहीं जानता, उसके ऋचा अर्थात् मन्त्र अर्थात् स्तुति व्यर्थ है और जो कारण रूप में विद्यमान परमात्मा को जानता है, वह उसी को प्राप्त हो जाता है।

ऋचा शब्द का अर्थ है स्तुति, वह दो प्रकार से हो सकती है, प्रथम विशेष्य और दूसरा विशेषण। परमात्मा की दृष्टि से सद् विशेष्य है और चित् उसका विशेषण है। जिस प्रकार कन्दुक और क्रिया हैं अर्थात् क्रिया का दर्शन कन्दुक के साथ ही हो सकता है, उसके बिना नहीं, उसी प्रकार परमात्मा के चिद् रूप का दर्शन सत् के साथ ही हो सकता है। स्तुति का सम्बन्ध वास्तविकता से है, परमात्मा के सत्ता रूप को जानने वाला उसकी स्तुति सद् अक्षर से करता है और उसके ज्ञान रूप को जानने वाला उसकी स्तुति चित् अक्षर से करता है।

अक्षर अर्थात् जिसका कभी विनाश नहीं होता, वह शब्द चार प्रकार का होता है-वैखरी, मध्यमा, पश्यन्ती और परा। प्रारम्भ की तीन वाणियाँ अक्षर नहीं है, क्योंकि ये परिवर्तनशील हैं, लेकिन परमात्मा की वाणी होने से चतुर्थ प्रकार की वाणी परा अपरिवर्तनशील है। इसका कारण यह है कि संसार में सब कुछ परिवर्तनशील है, केवल परमात्मा और परमात्मा की शक्तियाँ ही अपरिवर्तनशील हैं, इसलिये जो अपरिवर्तनशील है, वही परा वाणी का उपयोग कर सकता है। इस कसौटी पर परमात्मा की वाणी का कौन सा रूप खरा उतरता है, जहाँ तक इसका प्रश्न है, सत् और चित् ये दो रूप ही इस दृष्टि से ग्रहण करने योग्य है, क्योंकि ये दोनों परमात्मा का स्वरूप हैं।

व्योम शब्द का अर्थ आकाश है, रक्षा करने के कारण आकाश को व्योम कहा जाता है। अन्दर और बाहर से व्याप्त करके यह प्रत्येक वस्तु और व्यक्ति की रक्षा करता है। जहाँ तक इसका प्रश्न है कि यह रक्षा किस प्रकार करता है, इसका उत्तर यह है कि किसी वस्तु का आकाश जहाँ तक एक रहता है, वहाँ तक वह वस्तु एक रहती है, लेकिन जिस क्षण वस्तु को तोड़कर दो बना दिया जाता है, उसक समय उन दो के मध्य आकाश आ जाता है और उन दोनों को चारों ओर से व्याप्त कर लेता है। हम यह कह सकते हैं कि द्वित्व का अस्तित्व आकाश पर निर्भर है। जिस स्थिति में सब कुछ कारण रूप में विद्यमान रहता है, उस स्थिति को मन्त्र में परम व्योम कहा गया है और जिस स्थिति में कारण कार्य रूप में अभिव्यक्त हो जाता है, उस स्थिति का प्रतिनिधित्व करने वाले आकाश को व्योम कहा जा रहा है। इस प्रकार आकाश दो प्रकार का होता है, एक व्योम और दूसरा परम व्योम। एकता को द्वित्व में परिणत करना प्रथम व्योम का कार्य है और उस अनेकता को पुन: एकता में प्रतिष्ठित करना यह परम व्योम का कार्य है। प्रथम और दूसरे दोनों प्रकार का आकाश निराकार है, निराकार की दृष्टि से दोनों एक जैसे हैं। स्वरूप के आधार पर शब्दों को दो भागों में बाँटा जा सकता है, प्रथम परिवर्तनशील और दूसरा अपरिवर्तनशील। पश्यन्ती, मध्यमा और वैखरी-ये तीनों प्रथम प्रकार के व्योम में रहते हैं, जबकि शब्द का परा रूप परम व्योम में रहता है। वाणी के चारों रूप ब्रह्म नहीं हैं, ब्रह्म की पहचान निर्विकारता से होती है, जबकि पश्यन्ती मध्यमा और वैखरी-इनका स्वरूप परिवर्तनशील है, इसलिए इनको ब्रह्म नहीं माना जा सकता। जिस शब्द ब्रह्म में समस्त देवता कारण रूप में निवास करते हैं। जो ब्रह्म के इस रूप का साक्षात्कार कर लेता है, वही स्तुति करने के योग्य है, क्योंकि स्तुति का आधार सत्य होता है, कल्पना के आधार पर किसी की स्तुति नहीं की जा सकती।

देवता दो प्रकार के हैं, एक कार्यरूप और दूसरे कारण रूप। आकाश में दिखाई देने वाले सूर्य, चन्द्रमा, वायु,

आकाश, इन्द्र ये कार्यरूप हैं, जबकि इनका कारण रूप परमात्मा में स्थित रहता है। मन्त्र में दिव्य शक्तियों के कारण रूप का व्याख्यान किया गया है और बताया गया है कि वे परमात्मा में समाहित रहती हैं।

द्वितीय पंक्ति के पूर्वार्ध में बताया गया है कि जो उस परमात्मा को जिसमें सब कारण रूप में स्थित रहते हैं, को नहीं जानता, उसका ऋचा से क्या प्रयोजन? ऋचा का उद्देश्य स्तुति करना है, जो परमात्मा के सत् और चित् इन दोनों में से किसी एक रूप का दर्शन कर लेता है, वही परमात्मा की स्तुति करने के योग्य है और जिस व्यक्ति ने इनमें से किसी भी एक रूप का दर्शन नहीं किया है, उसके द्वारा स्तुति के उद्देश्य से कहे गए मन्त्र खोखले शब्द होते हैं, जिस प्रकार रसरहित सन्तरा फेंकने के योग्य होता है, उसे कोई भी ग्रहण नहीं करता, उसी प्रकार केवल कल्पना के आधार पर की गई स्तुति ग्रहण करने के योग्य नहीं होती। मन्त्र के द्वारा की गयी स्तुति उसी की सार्थक है, जिसने उस सत्य का दर्शन किया है। गुड़ खाने वाला ही गुड़ का वर्णन कर सकता है और उसका किया गया वर्णन सत्य के निकट हो सकता है, बिना दर्शन किये जो कोई भी गुड़ का वर्णन कर रहा है, वह असत्य का वर्णन कर रहा है। परमात्मा सत्य स्वरूप है और वह सत्य का ही ग्रहण करता है, जो उसे असत्य परोसना चाहता है, उससे वह दूर रहता है।

अब यह प्रश्न उपस्थित होता है कि जिस व्यक्ति ने सत्य का दर्शन किया है और वह सत्य स्तुति कर रहा है, उसे क्या प्राप्त होता है, इसका उत्तर मन्त्र के चतुर्थ चरण में दिया गया है। मन्त्र कहता है कि जो उसको जान लेता है, वह उसी में स्थित हो जाता है। परमात्मा के सत्ता रूप का दर्शन करने वाला परमात्मा के साथ उसके ज्ञान को पा लेता है। इसी प्रकार परमात्म के चित् रूप का दर्शन करने वाला परमात्मा के ज्ञान रूप के माध्यम से जुड़कर उसके सत्ता रूप को भी प्राप्त कर लेता है।

उपर्युक्त विवेचन के आधार पर कहा जा सकता है कि ऋक् अर्थात् स्तुति अक्षर अर्थात् अविनाशी रूप होती है। कहने का आशय यह है कि सभी स्तुतियाँ अक्षर रूप नहीं होतीं, लेकिन जिसका सम्बन्ध परमात्मा के स्वरूप से है, केवल वही स्तुति अक्षर अर्थात् अविनाशी है। परमात्मा की स्तुति केवल दो अक्षरों से की जा सकती है, इसमें से प्रथम अक्षर सत् है और दूसरा चित् है। इन दो अक्षरों में ऐसी क्या विशेषता है कि इनके माध्यम से परमात्मा की स्तुति की जानी चाहिए, इसका समाधान मन्त्र ने यह दिया है कि इन दो रूपों में देवता समाहित रहते हैं। समस्त संसार के संचालन करने वाली शक्तियों का नाम देवता है अर्थात् उत्पत्ति, स्थिति और प्रलय- जो इन तीनों कार्यों को कर रहे हैं, उनको देवता कहा गया है। ये देवता परमात्मा के जिस रूप में समाहित रहते हैं, उसमें से प्रथम सत् है और दूसरा चित् है। परमात्मा के इन दो रूपों में से जो किसी एक रूप का भी साक्षात्कार कर लेता है, वही परमात्मा की स्तुति करने के योग्य है। लेकिन जो इनमें से किसी एक रूप का भी साक्षात्कार नहीं कर पाता, उसके लिए मन्त्र कहता है कि उसका ऋचा से क्या प्रयोजन? ऋचा का उद्देश्य परमात्मा के सत्य स्वरूप के साथ एकता अनुभव करना है, लेकिन इस कार्य को वही कर सकता है, जिसने परमात्मा के सत्ता और ज्ञान रूप में किसी एक का दर्शन कर लिया हो। जो दर्शन नहीं कर पाता, उसके लिए ऋचा व्यर्थ है और जो कर पाता है, वह परमात्मा को प्राप्त हो जाता है। जो व्यक्ति परमात्मा के परमात्मरूप को प्राप्त करना चाहता है, उसे ऋचा (स्तुति) के अविनाशी रूप के रहस्य को समझना चाहिए। केवल स्तुति करने से काम नहीं बनता, जो अविनाशी स्तुति करने में समर्थ है, वही परमात्मा को पाता है।

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार।

---

xãUÌ ßÊèÌæüæÊ¿Ìæ

योग-साधना एवं स्वाध्याय शिविर की तिथियों में परिवर्तन किया गया है। अब यह शिविर १५ से २२ सितम्बर २०१९ को आयोजित होगा।

पाठकों की प्रतिक्रिया

१. सादर नमस्ते! परोपकारी पाक्षिक पत्रिका का जून प्रथम अंक आज दिनांक १२-०६-२०१९ शाम तक प्राप्त नहीं हुआ है। परोपकारी पाक्षिक पत्रिका का कोई अंक न मिलने पर यह जिज्ञासा और अधिक बढ़ जाती है कि पता नहीं कौन-सी विशेष बात उसमें लिखी होगी जो जानने से रह गयी अर्थात् परोपकारी पत्रिका का कोई अंक पढ़ने से यदि छूट जाता है तो बड़ा ही अधूरापन सा अनुभव होता है, जिस प्रकार से दैनिक समाचार-पत्र प्रतिदिन के समाचार देता रहता है और यदि किसी दिन समाचार न मिले तो यही लगता है कि आज के समाचार नहीं मिले। दूरदर्शन की सूचनाओं से वह क्षतिपूर्ति नहीं हो पाती। मई द्वितीय का अंक बहुत सुन्दर दिख रहा है। पिछले पृष्ठ पर ऋषि उद्यान भवन का दृश्य सज रहा है, इसके पीछे गऊशाला की गउओं का सजीव चित्र दिया गया है। प्रथम पृष्ठ पर संग्रहालय तथा इसके पीछे योग साधना शिविर की सूचनाएँ दी गई हैं। कुछ तड़प-कुछ झड़प प्रा. श्री राजेन्द्र 'जिज्ञासु' जी महर्षि दयानन्द सरस्वती के सन्देश में प्राण फूँक रहे हैं। सम्पादकीय का चयन और भाव भी देखते ही बनता है। 'मृत्यु सूक्त' के द्वारा लेखिका सुयशा आर्या जी, प्रवचनकर्त्ता-डॉ. धर्मवीर जी को पुनर्जीवित जैसे कर देती हैं। परोपकारिणी सभा के प्रधान डॉ. वेदपाल जी द्वारा पाठकों की शंका का समाधान बड़ी गहनता और तथ्यों के आधार पर दिया जाता है। परोपकारी में सभी लेखों का चयन और प्रकाशन सदैव से ही प्रभावी रहा है। लेख, प्राण फूँकने वाले, सत्य आधारित और वैदिक विचारों तथा वेद-सन्देश के देने वाले होते हैं। आपका एक पाठक

- सत्यपाल सिंह, शास्त्रीनगर, मेरठ, उ.प्र.।

२. सादर नमस्ते! आपका सम्पादकीय पढ़ा, जनवरी प्रथम, जनवरी द्वितीय और अप्रैल प्रथम, कई बार पढ़ना अच्छा लगता है। नयी जानकारी बढ़ती है आपको तो पता है मॉरिशस रामायण का देश है, गिरमिटिया मजदूर उसी के सहारे अपना दु:ख-सुख बाँटकर कष्टों को साझा करते थे। विशेषकर हनुमान को लोग पूजते रहते हैं। द्वार पर हर पौराणिक व्यक्ति के घर के सामने एक बड़ा चबूतरा है। मिट्टी के दीये प्रतिदिन जलाते हैं। लाल झंडी उड़ाते हैं। ताँगा तालाब के पहाड पर भी हनुमान स्थापित हैं। आपके सम्पादकीय में रामायणकालीन सभ्यता की जानकारी मिली, विशेषकर यह जाना कि वह वेदपाठी थे। सभी धार्मिक अनुष्ठानों को करने के लिये पंडित, पंडिता, कर्मकाण्डी और वेदपाठी थे। संस्कृत के विद्वान् थे। महिला और पुरुष में कोई भेद नहीं। संस्कृत में बात करते थे। थोड़ी जानकारी तो थी, आपके सम्पादकीय पढ़कर और विश्वास हो गया कि हनुमान, बाली, सुग्रीव और महिलाएँ भी निपुण थीं। आपका सम्पादकीय पुस्तकाकार माँगता है। मॉरिशस में आर्यसमाजी महिलाएँ पुरोहिता हैं, पंडिता हैं। सभी कर्मकाण्ड करवाती हैं। उधर पौराणिक महिलायें पूजा-पाठ करती हैं, पर पुरोहिता, पंडिता के पद से पीछे हैं। उन्हें लक्ष्मण रेखा से घेर रखा गया है, बाकि सभी क्षेत्रों में बराबर चलती हैं, सिवाय मन्दिर की गद्दी पर।

एक स्थान पर पौराणिक पंडित बातचीत कर रहे थे। एक ने कहा हमें महिलाओं को भी पुरोहित बनाना चाहिये, उन्हें आगे चलने का अवसर देना चाहिए-एक पंडित ने तपाक से कहा, वेद में कहाँ लिखा है कि महिलाओं को भी पुरोहिता बनाना चाहिए। अकेला चना भाड़ न फोड़ सका। शान्त हो गये। इस पर डॉ. उदयनारायण गंगू ने स्पष्टीकरण दिया कि वे भी पुरोहिता बन सकती हैं। इस पर मैंने भी पाठकों के विचार पर अपने विचार दिये, विचार संलग्न हैं, उन्हें तो रामायण का ही ज्ञान मालूम नहीं तो वेद क्या क्या खोजेंगे। डॉ. जी आपके विचारों की प्रतीक्षा होगी। मेरे लिए आशीर्वाद होगा।

आप द्वारा संशोधित मनुस्मृति मेरे सामने है। अध्ययन जारी रहता है।- **सोनालाल नेमधारी, मॉरिशस।**

सम्पादकीय टिप्पणी

श्रीमन् यह विचार वैदिक है और शास्त्रों द्वारा प्रमाणित है कि महिलाएँ ऋषिका, पंडिता, पुरोहित, अध्यापिका, नेतृ, प्रशासिका, उपदेशिका, न्यायाधीश, सेनापति, रानी आदि बन सकती हैं। महर्षि दयानन्द के वेदभाष्य में सबके प्रमाण हैं। शास्त्रों में भी हैं। आपके विचार ठीक हैं। मेरी पुस्तक 'महर्षि दयानन्द वर्णित शिक्षा पद्धति' में उन सब प्रमाणों का वर्णन है।

-डॉ. सुरेन्द्र कुमार

(परोपकारिणी सभा द्वारा संचालित)

योग–साधना एवं स्वाध्याय शिविर

परिवर्तित दिनांक : १५ से २२ सितम्बर २०१९

आज समाज के अनेक क्षेत्रों में अनेक प्रकार से लोग साधना के लिए प्रयासरत हो रहे हैं। अनेक प्रशिक्षकों द्वारा इस विषयक ज्ञान–विज्ञान भी प्रदान किया जा रहा है। फिर भी साधकों को साधना की सन्तुष्टिदायक स्थिति प्राप्त नहीं हो पा रही है। इसका कारण है कि साधना के विषय **साध्य, साधन, साधक व अन्य साधकों-बाधकों** के ज्ञान का वैदिक परम्परा से दूर होना। इस योग–साधना शिविर में इन्हीं विषयों का वैदिक–दर्शनों के द्वारा ज्ञान करवाया जायेगा, उससे सम्बन्धित जिज्ञासाओं का समाधान व आत्मनिरीक्षण के द्वारा अपनी उन्नति का मापदण्ड बताया जायेगा। यह शिविर अवश्य ही आपकी साधना की उन्नति में विशेष साधन बनेगा, जिससे कि मानव जीवन के मुख्य व चरम लक्ष्य की प्राप्ति उत्तरोत्तर काल में आप अपने निकट अनुभव करने लगेंगे।

प्रार्थियों हेतु नियम व अनुशासन

१. प्रत्येक प्रार्थी के लिए पूर्ण मौन अनिवार्य होगा।

२. शिविर के काल में किसी साधक के द्वारा नियम व अनुशासन भंग करने पर उसे शिविर के मध्य में ही शिविर छोड़ने के लिए बाध्य किया जा सकता है।

३. पूरे शिविर में साधक के द्वारा किसी भी माध्यम से बाह्य–सम्पर्क करना निषिद्ध रहेगा।

४. शिविर काल में किसी भी साधक को ऋषि उद्यान परिसर से बाहर जाने की अनुमति नहीं होगी।

५. साधकों की मूलभूत आवश्यकताओं की पूर्ति ऋषि–उद्यान परिसर में ही की जायेगी।

६. बाह्य–वृत्ति उत्पादक साधनों जैसे– समाचार–पत्र पढ़ना, आकाशवाणी श्रवण व दूरदर्शन देखने आदि पर पूर्ण प्रतिबन्ध रहेगा।

७. किसी प्रकार का शारीरिक रोग यथा– खाँसी, जुकाम अथवा अन्य कोई ध्वनि उत्पादक रोग वाले को प्रवेश नहीं दिया जायेगा।

८. बच्चों को साथ लाये जाने पर प्रार्थी को शिविर में प्रवेश नहीं दिया जाएगा।

९. शिविर के प्रारम्भ दिन से लेकर समापन–सत्र पर्यन्त पूर्ण रूप से शिविर में भाग लेना अनिवार्य होगा।

१०. नियम व अनुशासन के पालन को आवेदन में ही लिखित स्वीकार करना होगा।

उपरिलिखित किसी भी नियम व अनुशासन का पालन करने में असमर्थ व अयोग्य प्रार्थी को शिविर में प्रवेश नहीं दिया जायेगा।

प्रार्थियों के लिए सूचनाएँ- परोपकारिणी सभा, केसरगंज, अजमेर (राज.) कार्यालय से (०१४५-२४६०१६४) से संपर्क कर शिविर से पूर्व शुल्क जमा करवा कर अपने नाम का पंजीयन करा लें। शिविर में माता–बहिनें भी भाग ले सकती हैं। पुरुषों एवं महिलाओं के आवास की सामूहिक व्यवस्था पृथक्–पृथक् की जाती है। पृथक् कक्ष की व्यवस्था पूर्व सूचना व उपलब्धता के अनुसार की जाती है। ऋषि उद्यान में दरी, गद्दे, तकिए एवं बर्तन उपलब्ध हैं, शेष दैनिक उपयोग की वस्तुएँ यथा मंजन, ब्रश, साबुन, तेल, दवाएँ, बिछाने–ओढ़ने की चादरें, लिखने के लिए संचिका (नोटबुक), लेखनी, करदीप (टार्च) आदि को साधक अपने साथ लाएँ। वस्त्र सादगी एवं

शिष्टाचार के अनुकूल हों, आभूषणों एवं सुगन्धित द्रव्यों का उपयोग न हो। आपके पास योगदर्शन हो तो साथ लाएँ। सतर्कता की दृष्टि से कीमती वस्तुएँ साथ न लायें। यदि आपको कोई संक्रामक रोग, तेज खांसी, दमा, मिर्गी आदि मानसिक रोग, वायु विकार या अन्य गंभीर रोग हो, तो कृपया शिविर में आना स्थगित रखें। लौटने का रेल-आरक्षण शिविर में आने से पूर्व करवा लें। अजमेर पहुँचने की सूचना घर पर देनी हो तो शिविर स्थल में प्रवेश से पहले दे देवें। खाने-पीने की वस्तुएँ साथ न लावें।

यह शिविर परोपकारिणी सभा, अजमेर के सौजन्य से आयोजित किया जा रहा है। शिविर शुल्क १००० रु. मात्र जमा करना होगा। पृथक् कक्ष का शुल्क १००० रु. अतिरिक्त देय है। शिविर में भाग लेने वालों को शिविर के प्रारंभ दिनांक को सायं चार बजे तक शिविर स्थल ऋषि उद्यान, पुष्कर मार्ग, अजमेर (०१४५-२६२१२७०) में पहुँच जाना आवश्यक है क्योंकि इसी दिन शाम को शिविर के अनुशासन एवं विभिन्न व्यवस्थाओं संबन्धी महत्त्वपूर्ण सूचनाएँ दी जाएँगी। शिविर का समापन अन्तिम दिन दोपहर एक बजे तक होगा। शिविर समाप्ति से पूर्व जाने की अनुमति नहीं दी जायेगी।

शिविर से आपका जीवन श्रेष्ठतर व पवित्रतर बने, इन्हीं शुभकामनाओं के साथ।

मन्त्री, परोपकारिणी सभा, केसरगंज, अजमेर दूरभाष : ०१४५-२४६०१६४

: मार्ग :

ऋषि उद्यान शिविर स्थल पर पहुंचने के लिए फॉयसागर की ओर जाने वाली सिटी बस या ऑटो-रिक्शा, रेलवे स्टेशन व बस स्टेण्ड से (वाया-आगरा गेट/फव्वारा चौराहा) सर्वदा सुलभ रहते हैं।

email:psabhaa@gmail.com

संयोजक

एक आहुति अपने आचार्य के लिए........

ऋषि दयानन्द की उत्तराधिकारिणी परोपकारिणी सभा की तन, मन, धन से सेवा करने वाले, उसे अपनी मातृवत् समझने वाले और यहाँ तक कि अपना जीवन समर्पित कर देने वाले डॉ. धर्मवीर आज अपना समस्त भार आर्य जनता अर्थात् अपने उत्तराधिकारियों पर छोड़ गये हैं। उन्होंने ऋषि के स्वप्नों को अपना कर्त्तव्य समझकर सभा को गगनचुंबी ऊँचाइयों तक पहुँचाया। अनेक नये प्रकल्प चलाये यथा-वैदिक गुरुकुल, गोशाला, आश्रम, अतिथियों के ठहरने व खान-पान की निःशुल्क व्यवस्था आदि। उन्होंने जो-जो कार्य छेड़े उनकी आवश्यकताओं की पूर्ति में कभी न्यूनता न आने दी। परोपकारिणी सभा ऐसे पुत्र को प्राप्त कर गौरव का अनुभव करती है और बिछुड़कर शोकग्रस्त होने का भी। उनके द्वारा शुरु किये कार्य कभी शिथिल न पड़ें, इस कारण **सभा ने डॉ. धर्मवीर जी की स्मृति में एक करोड़ रु. की स्थिर निधि बनाने का संकल्प लिया है,** जिससे कि धन धर्म के काम आ सके। इसमें सन्देह नहीं कि ये समस्त कार्य आर्य जनता के सहयोग से ही प्रारम्भ हो सके हैं और सहयोग से ही चल भी रहे हैं। इसलिये इसमें भी सन्देह नहीं कि सभा के इस संकल्प को आर्य जनता शीघ्र पूर्णता की ओर पहुँचा देगी और शायद उससे भी कहीं बढ़कर। यज्ञ तो हवि माँगता है। बिना हवि के यज्ञ की कल्पना भी क्या? बस देरी तो सूचित होने की है। हवि बनना तो आर्यों के खून में है, तन से, मन से अथवा धन से।

आप अपना दान चैक, ड्राफ्ट या सभा के खाते में सीधे भी भेज सकते हैं। कृपया, राशि भेजने के पश्चात् सभा में दूरभाष या पत्र द्वारा अवश्य सूचित कर दें।

कन्हैयालाल आर्य - मन्त्री

संस्था की ओर से....

क्या आप प्रतिदिन अतिथि यज्ञ नहीं कर पाते?

तो आइये, अतिथि यज्ञ के होता बनिये

वैदिक नित्यकर्मों में अतिथि यज्ञ प्रतिदिन करना अनिवार्य है, किन्तु आपको प्रतिदिन अतिथि मिलना संभव नहीं, फिर अतिथि यज्ञ कैसे किया जाय? इसका उपाय है, कुछ राशि प्रतिदिन अतिथि यज्ञ के नाम से निकाल ली जाये और उसको एकत्र कर अतिथि सत्कार में गुरुकुल में भोजन आदि के सहयोग में दे दी जाय।

यह अल्प राशि आप दैनिक संचय घट में जमा भी कर सकते हैं, वर्ष में लोग अरबों रुपए आग में पटाखे जलाकर व्यय करते हैं, असावधानी से बिजली जलती छोड़ इसे गंवा देते हैं आदि ऐसी छोटी-छोटी असावधानियों को रोक कर हम उसकी बचत राशि इस पावन कृत्य हेतु सभा को वर्ष में आसानी से दे सकते हैं।

सभा के धार्मिक क्रियाकलापों एवं आवासीय स्थल ऋषि उद्यान में उपर्युक्त पावन क्रियाकलाप लम्बे समय तक अबाध चलते रहें, इसके लिए सभा की योजना है कि प्रतिदिन प्रतिवर्ष ५ हजार एक सौ रु. की राशि प्रदान करने वाले उदार यशस्वी दानदाताओं का नाम अतिथि यज्ञ के स्थायी सदस्यों में अंकित किया जाता है ऐसे सज्जनों के नाम का परोपकारी में प्रकाशित भी किये जाते हैं।

यदि अपने सामर्थ्य के अनुसार राशि को न्यूनाधिक करना चाहें तो आपकी स्वतन्त्रता है अधिक से अधिक लोग परोपकारिणी सभा से जुड़ सकें, आप ऐसा करके ऋषि दयानन्द के कार्यों को आगे बढ़ाने में सहायक होंगे इसलिए ऐसी राशि निश्चित की है। आप से प्रार्थना है अपना नाम पता और संकल्प लिखकर अवगत करायें और अतिथि यज्ञ के होता बनें। अपनी राशि प्रतिमाह अथवा सुविधानुसार मनीआर्डर/डीडी/चैक द्वारा अथवा स्वयं उपस्थित होकर कार्यालय में जमा करा सकते हैं। आपका दान ८०जी (आयकर की धारा) के अंतर्गत कर मुक्त होगा।

अनेक 'अतिथि यज्ञ के होता' सदस्यों का आग्रह है, निश्चित तिथि जन्मदिन, विवाह वर्षगांठ या विशेष अवसर पर वे अपनी ओर से संस्था में भोजन कराना चाहते हैं। ऐसे महानुभावों से निवेदन है कि वे अतिथि यज्ञ के होता के रूप में एक दिन के भोजन व्यय की राशि लगभग पाँच हजार एक सौ रुपये भेजते हुए इच्छित दिन का विवरण सूचित करेंगे तो उन्हें उनके जन्मदिवस आदि पर परोपकारिणी सभा की ओर से दूरभाष द्वारा आशीर्वाद प्रदान किया जायेगा। यदि उस शुभ अवसर पर वे स्वयं उपस्थित होकर यजमान बनें तो यह सर्वोत्तम होगा।

अतिथि-यज्ञ के होताओं से अनुरोध

अतिथि-यज्ञ के होताओं से उनकी वैवाहिक वर्षगाँठ अथवा जन्मदिन व विभिन्न अवसरों पर ५१०० रु. प्रतिवर्ष सभा को प्राप्त होते रहते हैं। जो महानुभाव संकल्प के साथ इस पुनीत कार्य से जुड़े हुए हैं, उनसे हमारा अनुरोध है कि वे अपनी राशि भेजते समय **जन्मतिथि/वैवाहिक वर्षगाँठ आदि व दूरभाष संख्या** सूचित करना न भूलें। साथ ही यह भी अवश्य सूचित करा देवें कि पहले से भिजवा रहे हैं अथवा नया शुरू किया है। आप अपनी राशि सभा के बैंक खाते में नकद अथवा चैक द्वारा जमा करा सकते हैं।

परोपकारिणी सभा की गतिविधियाँ

परोपकारिणी सभा महर्षि दयानन्द सरस्वती द्वारा स्थापित उनकी उत्तराधिकारिणी सभा है और केवल नाम से ही नहीं, बल्कि अपने कार्यों से भी वह ऋषि के उत्तराधिकार के दायित्व को पूर्णतया निभा रही है। महर्षि दयानन्द सरस्वती

ने इस सभा की स्थापना के समय तीन उद्देश्य रखे थे।

१. वेदादि सत्यशास्त्रों का प्रकाशन २. विद्वान् उपदेशक तैयार करके देश-विदेश में वैदिक धर्म का प्रचार एवं ३. आर्यावर्त्तीय दीन-दरिद्रों की सेवा।

इन सभी कार्यों को सभा अपने विभिन्न प्रकल्पों के माध्यम से पूरा करने में सर्वसामर्थ्य से लगी हुई है। यद्यपि सभा के पास आर्थिक आय का कोई स्थाई माध्यम नहीं है, पुनरपि ऋषिभक्तों एवं आर्यजनों के सहयोग और विश्वास पर ही सभा ने बड़े-बड़े कार्यों को प्रारम्भ किया और निरन्तर कर भी रही है। आचार्य डॉ. धर्मवीर जी, जो कि वर्तमान में परोपकारिणी सभा के प्रधान एवं मूल स्तम्भ थे, उनका कहना था कि ''**कार्य यदि अच्छा है तो उसे प्रारम्भ कर देना चाहिये, सहयोग तो स्वयं ही मिल जाता है।**'' यही शैली अपनाकर आज भी वैदिक विचार के प्रचार का कार्य निरन्तर जारी है। डॉ. धर्मवीर जी के जाने से सभा को बड़ा आघात अवश्य लगा है, परन्तु आर्यों का स्नेह, भरोसा उनके द्वारा प्रारम्भ किये गये कार्यों को रुकने नहीं देगा-ऐसा सभा को पूर्ण विश्वास है।

परोपकारिणी सभा आज अनेक कार्यों, माध्यमों से इस वेद प्रचार यज्ञ में लगी है, जिसकी सूची यहाँ दी जा रही है-

भव्य ऋषि उद्यान आश्रम, अतिथि यज्ञ, भोजनशाला, गौशाला, वानप्रस्थ एवं संन्यासाश्रम, गुरुकुल, परोपकारी पत्रिका, प्रकाशन, योग साधना एवं चरित्र निर्माण शिविर, सत्यार्थ प्रकाश व ऋषि जीवन चरित्र का नि:शुल्क वितरण, पाण्डुलिपियों का डिजिटलाइजेशन, पुस्तकालय, औषधालय, देश-देशान्तरों में वेद-प्रचार, आयुर्वेदिक औषधालय।

दयानन्द धर्मार्थ चिकित्सालय

परोपकारिणी सभा द्वारा संचालित ऋषि उद्यान में वर्ष २०१२ से आयुर्वेदिक चिकित्सालय चल रहा है। चिकित्सालय में उपलब्ध सभी औषधियाँ नि:शुल्क दी जाती हैं।

दानी महानुभावों से सहयोग की भी अपेक्षा है।

परोपकारिणी सभा में आयुर्वेदिक चिकित्सक की आवश्यकता

सभा द्वारा संचालित आयुर्वेदिक चिकित्सालय के लिये योग्य आयुर्वेदिक चिकित्सक की आवश्यकता है। चिकित्सालय में सेवा देने का समय प्रतिदिन २ घण्टे है। आवास, भोजन आदि की व्यवस्था सभी की ओर से ही होगी।

सम्पर्क- ०१४५-२६२१२७०, ९४६०४२११८३

परोपकारिणी सभा के प्रकल्पों में सहयोग करने हेतु

खाताधारक का नाम - परोपकारिणी सभा, अजमेर (PAROPKARINI SABHA AJMER)

१. बैंक का नाम-**भारतीय स्टेट बैंक, डिग्गी बाजार, अजमेर।**

बैंक बचत खाता **(Savings)** संख्या-**10158172715**

IFSC-SBIN0007959

२. बैंक का नाम-**आई.डी.बी.आई**, पावर हाउस के सामने, जयपुर रोड, अजमेर।

बैंक बचत खाता **(Savings)** संख्या-**091104000057530**

IFSC-IBKL0000091 email : psabhaa@gmail.com

दानदाताओं की सूची

अतिथि यज्ञ के होता

(१६ से ३० जून २०१९ तक)

१. श्री अमित कुमार गुप्ता, कोलकाता २. श्री जगराम आर्य, महेन्द्रगढ़ ३. श्रीमती प्रकाशवती राठी, सोनीपत ४. श्रीमती अपर्णा सेन गुप्ता, कोलकाता ५. श्री वेदप्रकाश शर्मा, अजमेर ६. श्री अमृतमुनि, हरिद्वार ७. श्री आर.एस. कोठारी, जयपुर ८. श्रीमती सूर्यकिरण आर्य, जोधपुर ९. श्रीमती मंजुला बेन मिस्त्री, मुम्बई १०. स्वामी ब्रह्मानन्द, हिसार ११. श्री शेखर आर्य, रतलाम १२. श्रीमती तूलिका साहू, बिलासपुर।

गोभक्तों से निवेदन

ऋषि-उद्यान में परमार्थ हेतु गोशाला संचालित है। गोशाला की गौवों के दूध का वितरण सभी गुरुकुलवासियों, संन्यासियों एवं आगन्तुक अतिथियों में नि:शुल्क किया जाता है। आप सभी गौ-भक्तों एवं उदारमना दानदाताओं से सभा का निवेदन है कि गौवों को उत्तम चारा मिले, इसके लिए जो भी सज्जन चारा दान देना चाहें उनका स्वागत है। यदि आप दूरस्थ प्रदेश के हैं तो कृपया चारे हेतु अनुमानित राशि सभा को ड्राफ्ट/चैक/नगद भेज सकते हैं। यशस्वी दानदाताओं के नाम परोपकारी पत्रिका में प्रकाशित किए जाएँगे। आपका दान गौवों के संवर्धन में सहायक होगा।

ऋषि-उद्यान में संचालित गोशाला के दानदाता

(१६ से ३० जून २०१९ तक)

१. श्री हरसहाय सिंह गंगवार आर्य, बरेली २. श्री शिवराज जाट, नसीराबाद ३. श्री सुरेश-मंजु नवाल, अजमेर ४. महिला पार्क, गुरुग्राम ५. स्वामी ब्रह्मानन्द, हिसार ६. श्री शेखर आर्य, रतलाम ७. श्रीमती बीना शृंगी, कोटा ८. श्री रणवीरसिंह, नई दिल्ली ९. श्रीमती कलावती, गुलबर्गा १०. श्रीमती तूलिका साहू, बिलासपुर ११. श्री यज्ञमुनि, जीन्द १२. श्रीमती प्रकाशवती राठी, सोनीपत १३. श्री बलराजसिंह-पूनम राठी, सोनीपत १४. श्रीमती कृष्णा देवी-राजसिंह कादियान, सोनीपत १५. श्री सुमित कुमार गुप्ता, कलकता २५. श्री दिलीपसिंह आर्य, कैथल।

अन्न-संग्रह (दानदाता)

१. श्री माणकचन्द जैन, छोटी खाटू २. श्री किसना जाट, नसीराबाद ३. श्री रामकिशन दारोगा, नसीराबाद ४. श्री हरमुनि जाट, नसीराबाद ५. श्री सोहनलाल कुम्हार, नसीराबाद ६. श्री गोवर्धन जाट, नसीराबाद ७. श्री मुकेश जाट, नसीराबाद ८. श्री दुला जाट, नसीराबाद ९. श्री जीवण प्रजापत, नसीराबाद ११. श्री किशन जाट, नसीराबाद १२. श्री कानजी जाट, नसीराबाद १३. श्री हुकमाराम गुर्जर, नसीराबाद।

वर्णव्यवस्था से सब मनुष्य उन्नतिशील होते हैं

जिस-जिस पुरुष में जिस-जिस वर्ण के गुण कर्म हों उस-उस वर्ण का अधिकार देना, ऐसी व्यवस्था रखने से सब मनुष्य उन्नतिशील होत हैं। क्योंकि उत्तम वर्णों को निम्न वर्ण में जाने से वर्णों को भय होगा कि हमारे सन्तान मूर्खत्वादि दोषयुक्त होंगे तो शूद्र हो जायेंगे और सन्तान भी डरते रहेंगे कि जो हम उक्त चाल-चलन और विद्यायुक्त न होंगे तो शूद्र होना पड़ेगा और नीच वर्णों को उत्तम वर्णस्थ होने के लिए उत्साह बढ़ेगा।

(स. प्र. स.)

परोपकारिणी सभा, अजमेर के तत्त्वावधान में
१३६ वाँ ऋषि बलिदान समारोह

दिनांक १, २, ३ नवम्बर २०१९, शुक्र, शनि, रविवार

विराट् व्यक्तित्व महर्षि दयानन्द की समग्र मानव जाति ऋणी है। इस ऋण को चुकाने का स्वर्ण-अवसर ऋषि के १३६वें बलिदान वर्ष के उपलक्ष्य में हमको प्राप्त हुआ है। इस अवसर पर परोपकारिणी सभा भव्य समारोह का आयोजन करने जा रही है।

यजुर्वेद पारायण यज्ञ- 'यजुर्वेद पारायण यज्ञ' की पूर्णाहुति बलिदान समारोह के अन्तिम दिन ३ नवम्बर को प्रातः १० बजे होगी। यज्ञ के ब्रह्मा आर्यजगत् के प्रतिष्ठित विद्वान् डॉ. विनय विद्यालंकार-प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तराखण्ड होंगे।

वेदगोष्ठी - प्रतिवर्ष की परम्परा के अनुसार इस वर्ष भी अन्तर्राष्ट्रीय दयानन्द वेदपीठ दिल्ली एवं अनुसन्धान केन्द्र परोपकारिणी सभा के संयुक्त प्रयास से वेदगोष्ठी का आयोजन किया जायेगा। इस गोष्ठी में देश के विविध विद्वान् अपने शोधपूर्ण मौलिक विचार प्रस्तुत करेंगे। इस वर्ष वेदगोष्ठी का विचारणीय बिन्दु है- **वेद वर्णित ईश्वर-स्वरूप एवं नाम (ईश्वर के गुण, कर्म, स्वभाव)।** जो विद्वान् गोष्ठी में शोधपत्र प्रेषित करना चाहते हैं, वे १० अक्टूबर तक सभा के पते पर प्रेषित करवा देवें। १, २, ३ नवम्बर को ऋषि बलिदान समारोह के कार्यक्रमों के साथ-साथ वेदगोष्ठी भी चलती रहेगी। ऋषि-भक्त इसे सुनने का लाभ उठा सकते हैं।

चतुर्वेद कण्ठस्थीकरण प्रतियोगिता- प्रतिवर्ष आयोजित की जाने वाली इस प्रतियोगिता में २१ वर्ष तक के छात्र भाग ले सकते हैं। किसी भी वेद को आद्योपान्त स्मरण करके इस प्रतियोगिता में भाग लिया जा सकता है। जो छात्र जिस वेद पर गत वर्षों में पारितोषिक ग्रहण कर चुके हैं, वे उस वेद से अतिरिक्त वेद स्मरण करके भाग ले सकते हैं। २ नवम्बर को परीक्षा एवं ३ नवम्बर को पुरस्कार-वितरण का कार्यक्रम होगा। जो छात्र इस प्रतियोगिता में भाग लेना चाहते हैं, वे अपने-अपने गुरुकुलों, आश्रमों, संस्थानों से आचार्य द्वारा अधिकृत पत्रक पर २-छायाचित्र सहित अपना परिचय १० अक्टूबर, २०१९ तक आचार्य महर्षि दयानन्द आर्ष गुरुकुल, ऋषि उद्यान, अजमेर के पते पर भेज दें।

सम्मान - प्रतिवर्ष विशिष्ट वैदिक विद्वान्, विदुषियों एवं कार्यकर्त्ताओं को इस समारोह में सम्मानित किया जाता है। इस वर्ष भी सम्मान -समारोह होगा। जिसमें अनेक विद्वान्-विदुषियों एवं कार्यकर्त्ताओं को सम्मानित किया जायेगा।

नवम्बर के आरम्भ में अजमेर में हल्की ठंड होने लगती हैं, ऋषि उद्यान खुले में होने से सर्दी का प्रभाव कुछ अधिक रहेगा। रात्रि में कम्बल ओढ़ने जैसी ठण्ड रहेगी। जो समूह में रहना चाहते हैं उनकी निवास व्यवस्था ऋषि उद्यान में होगी और जो अपने निवास की व्यवस्था होटल-धर्मशाला में करवाना चाहते हैं, कृपया वे सभा कार्यालय से पूर्व सम्पर्क कर अग्रिम राशि जमा करवा कर कमरा आरक्षित करवा लें। सभी से विशेष निवेदन है कि अपने आने की सूचना कम से कम एक सप्ताह पूर्व दे देवें, जिससे संख्या का अनुमान होकर तदनुसार व्यवस्था की जा सके। सभी से निवेदन है कि १३६वें बलिदान समारोह में अपने परिवार व समाज के सभी कार्यकर्त्ताओं सहित पधार कर महर्षि को हार्दिक श्रद्धांजलि प्रदान करें, महर्षि दयानन्द के स्वप्न को साकार करने हेतु प्रेरणा उत्साह प्राप्त कर प्रचार-प्रसार को एक नई चेतना प्रदान करें।

ऋषि मेले में आमन्त्रित विद्वान् एवं विशिष्ट अतिथि- स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती-मन्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा, उ.प्र., प्रा. राजेन्द्र जिज्ञासु-अबोहर, श्री सुरेश अग्रवाल-प्रधान सार्वदेशिक सभा, प्रो. सुरेन्द्र कुमार-पूर्व कुलपति, गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार, श्री तपेन्द्र वेदालंकार-(रि. आई.ए.एस.) जयपुर, आचार्य सत्यानन्द वेदवागीश, आचार्य विरजानन्द दैवकरणि-झज्जर, श्री दीनदयाल गुप्त-कोलकाता, श्री शत्रुघ्न आर्य-राँची, श्री सत्यानन्द आर्य-दिल्ली, डॉ. राजेन्द्र विद्यालंकार-कुरुक्षेत्र, प्रो. महावीर अग्रवाल-पूर्व कुलपति, उत्तराखण्ड संस्कृत विश्वविद्यालय, प्रो. कमलेश चौकसी-अहमदाबाद, डॉ. रामप्रकाश वर्णी-एटा, डॉ. ब्रह्ममुनि-महाराष्ट्र, श्री जगदीश शर्मा-जयपुर, श्री शिवकुमार चौधरी-इन्दौर, श्री जयदेव आर्य-राजकोट, श्री ठा. विक्रमसिंह-दिल्ली, श्री प्रियव्रतदास एवं श्रीमती शन्नो देवी-भुवनेश्वर, आचार्य विजयपाल-झज्जर, श्री सज्जनसिंह कोठारी-पूर्व लोकायुक्त जयपुर, श्री विजयसिंह भाटी-जोधपुर, श्री इन्द्रजित् देव-यमुनानगर, आचार्य विद्यादेव, आचार्य घनश्यामसिंह, डॉ. प्रशस्यमित्र शास्त्री- रायबरेली, डॉ. रघुवीर वेदालंकार-दिल्ली, स्वामी ऋतस्पति-होशंगाबाद, आचार्या सूर्या देवी-शिवगंज, आचार्या धारणा 'याज्ञिकी', आचार्य ओम्प्रकाश-आबूपर्वत, मा. रामपाल आर्य-प्रधान आ.प्र.स. हरियाणा, डॉ. महावीर मीमांसक-दिल्ली, श्री विजय शर्मा- भीलवाड़ा, डॉ. जगदेव-रोहतक, पं. रामनिवास गुणग्राहक-श्रीगंगानगर, डॉ. कृष्णपाल सिंह-जयपुर, डॉ. मुमुक्षु आर्य-नोएडा, पं. सत्यपाल पथिक, पं. भूपेन्द्र सिंह आदि।

इस समारोह हेतु आपका आर्थिक सहयोग आयकर की धारा '८०-जी' के अन्तर्गत दिए गये प्रावधान के अनुरूप कर मुक्त होगा। विदेश में निवास कर रहे धर्मप्रेमी सज्जन स्वदेश में होने वाले इस समारोह हेतु मुक्त हस्त से दान देकर देश का गौरव बढ़ाएँ। सभा को भारतीय शासन द्वारा विदेशों से दानस्वरूप दी गई राशि को प्राप्त करने की छूट प्राप्त है। आपका सहयोग ही हमारा सम्बल है। शुभकामनाओं सहित।

डॉ. वेदपाल
प्रधान

कन्हैयालाल आर्य
मन्त्री

ओ३म्

परोपकारिणी सभा

दयानन्द आश्रम, केसरगंज, अजमेर (राज.) पिन. ३०५००१ दूरभाष– ०१४५–२४६०१६४

वेदगोष्ठी–२०१९

विषय– वेद वर्णित ईश्वर–स्वरूप एवं नाम (ईश्वर के गुण, कर्म, स्वभाव)

मान्यवर सादर नमस्ते।

आशा करता हूँ कि आप स्वस्थ सानन्द होंगे। आपको सुविदित है कि सद्‌भावी विद्वानों के सहयोग से सदा की भांति इस वर्ष भी अन्तर्राष्ट्रीय दयानन्द वेदपीठ, दिल्ली तथा अनुसंधान विभाग परोपकारिणी सभा, अजमेर के संयुक्त तत्त्वावधान में ऋषि मेले के अवसर पर वेदगोष्ठी का आयोजन किया जा रहा है। इस गोष्ठी में देश के अनेक भागों से पधारे प्रख्यात वैदिक विद्वान् निर्धारित विषयों पर अपने शोधपूर्ण विचार प्रस्तुत करते हैं। इनमें से चुने हुए शोध–पत्र परोपकारी व वेदपीठ की शोध–पत्रिका के माध्यम से प्रकाशित किये जाते हैं। जिससे जो लोग गोष्ठी में नहीं आ सकते वे भी लाभान्वित होते हैं। विद्वानों को भी इस विषय पर अधिक विचार करने का अवसर मिलता है। गत ३१ वर्षों से गोष्ठी का आयोजन निरन्तर किया जा रहा है। अब तक निम्नलिखित बिन्दुओं पर विचार किया जा चुका है:–

१. ऋषि दयानन्द की वेदभाष्य शैली।	**१२ नवम्बर, १९८८**
२. वेद और कर्मकाण्डीय विनियोग।	**०५ नवम्बर, १९८९**
३. अथर्ववेद समस्या और समाधान।	**२७ नवम्बर, १९९०**
४. वेद और विदेशी विद्वान्।	**१६ नवम्बर, १९९१**
५. वैदिक आख्यानों का वास्तविक स्वरूप।	**०१ नवम्बर, १९९२**
६. वेदों के दार्शनिक विचार।	**२८ नवम्बर, १९९३**
७. सोम का वैदिक स्वरूप।	**१२ नवम्बर, १९९४**
८. पर्यावरण समस्या का वैदिक समाधान।	**०३ नवम्बर, १९९५**
९. वैदिक समाज व्यवस्था।	**०१ नवम्बर, १९९६**
१०. वेद और राष्ट्र।	**२४ अक्टूबर, १९९७**
११. वेद और विज्ञान।	**०९ अक्टूबर, १९९८**
१२. वेद और ज्योतिष।	**१० नवम्बर, १९९९**
१३. वेद और पदार्थ विज्ञान	**०३ नवम्बर, २०००**
१४. वेद और निरुक्त	**१८ नवम्बर २००१**
१५. वेद में इतिहास नहीं	**०१ नवम्बर २००२**
१६. वेद में कृषि व वनस्पति विज्ञान	**३१ अक्टूबर २००३**
१७. वेद में शिल्प	**१९ नवम्बर २००४**
१८. वेदों में अध्यात्म	**११ नवम्बर, २००५**
१९. वेदों में राजनीतिक चिन्तन	**२७ नवम्बर, २००६**
२०. वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है	**१६ नवम्बर, २००७**
२१. वैदिक समाज विज्ञान	**०५ नवम्बर, २००८**
२२. सत्यार्थप्रकाश का ७ वाँ समुल्लास व वेद	**२३ अक्टूबर, २००९**
२३. सत्यार्थप्रकाश का ८ वाँ समुल्लास व वेद	**१२ नवम्बर, २०१०**
२४. सत्यार्थप्रकाश का ९ वाँ समुल्लास व वेद	**०४ नवम्बर, २०११**
२५. महर्षिदयानन्दाभिमत मन्तव्यः वैदिक परिप्रेक्ष्य	**१६ नवम्बर, २०१२**
२६. वेद और सत्यार्थप्रकाश का १२वाँ समुल्लास	**८ नवम्बर, २०१३**
२७. भारतीय मत सम्प्रदाय और वेद	**३१ अक्टू. १,२ नव., २०१४**
२८. भारतीय मत सम्प्रदाय और वेद	**२०,२१,२२ नव., २०१५**
२९. दयानन्द दर्शन की वेदमूलकता	**४,५,६ नव., २०१६**
३०. वेदों में शिक्षा के सिद्धान्त	**२७,२८,२९ अक्टू., २०१७**
३१. षड्‌दर्शनों की वेदमूलकता और महर्षि दयानन्द	**१६,१७,१८ नवम्बर., २०१८**